दिसम्बर 2015

दादावाणी

कीमत ₹ 10

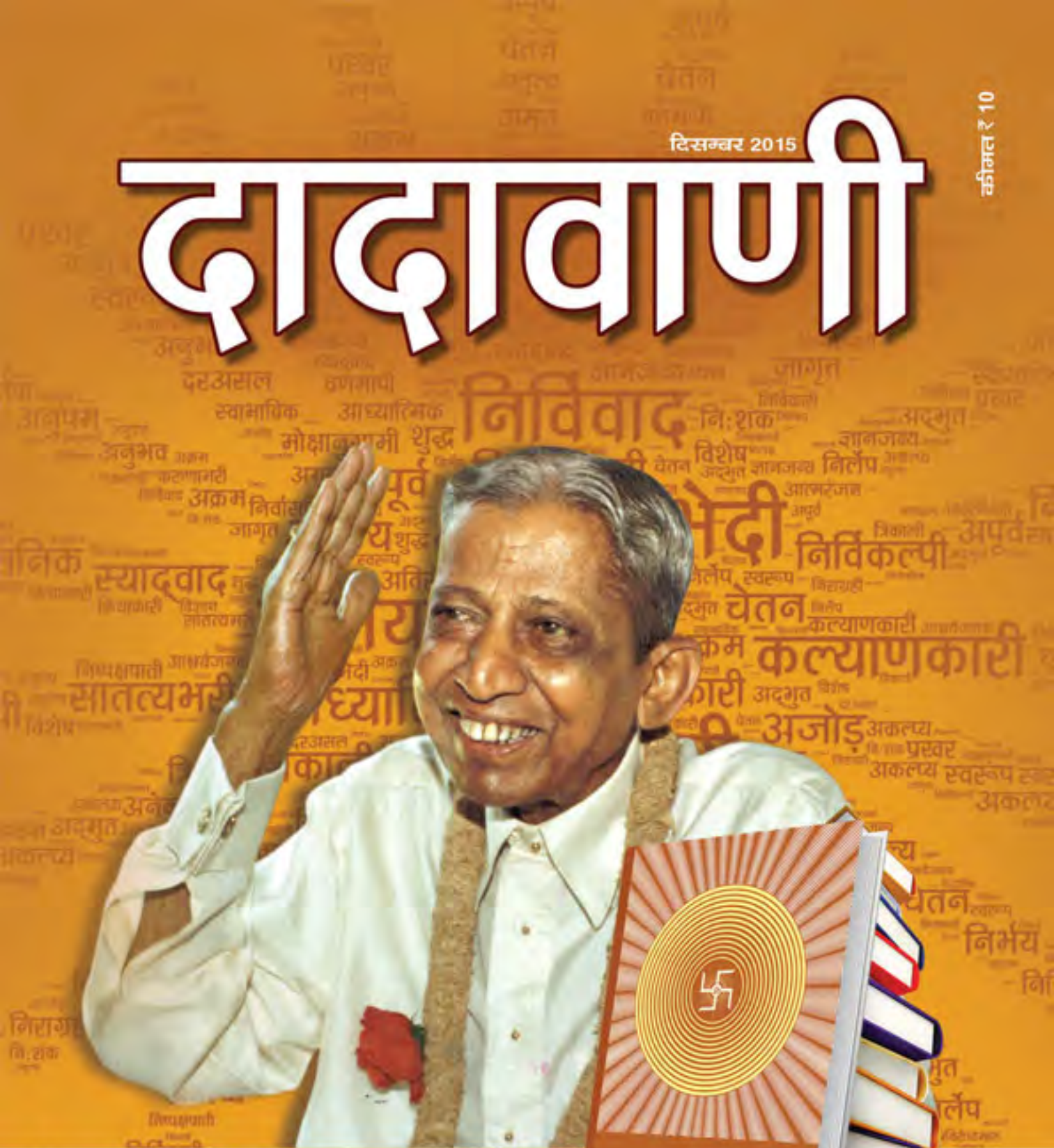

चौदह गुणस्थानक हैं इसलिए चौदह आप्तवाणियाँ बनेंगी।
सभी चौदह आप्तवाणीयाँ चौदह गुणस्थानक समान हैं।
चौदह गुणस्थानकों को भेद दें ऐसी हैं।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 11 अंक : 2
अखंड क्रमांक : 122
दिसम्बर 2015

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

शास्त्ररूपी इन आप्तवाणियों से होगा युग परिवर्तन

संपादकीय

घेर-घेर पहुँची जगाडशे आप्तवाणी, वांचता ज बोले, 'मारी ज वात मारा ज ज्ञानी।' गजबनो पावर, आत्यंतिक कल्याणी, संसार व्यवहारे, पण सहुने हितकारीणी।

घर-घर तक पहुँचकर जगाएगी आप्तवाणी, पढ़ते ही बोलेंगे, 'मेरी ही बात, मेरे ही ज्ञानी।' ग़ज़ब का पावर, आत्यंतिक कल्याणी, संसार व्यवहार में भी सभी को हितकारिणी।

ज्ञानीपुरुष, जो संसार में हर प्रकार से विश्वास करने योग्य होते हैं, इतना ही नहीं बल्कि जो ठेठ मोक्ष तक पहुँचा दें, उन्हें आप्तपुरुष कहते हैं और वे जो कुछ बोलते हैं, उसे आप्तवाणी कहते हैं। परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) प्ररुपित आप्तवाणी में तमाम शास्त्रों का सार समा गया है। उसमें अविरोधाभास, पद्धतिपूर्वक लगातार ज्ञान दिया गया है। यह ज्ञान लोगों को बहुत हेल्प (मदद) करता है और इसी से पूरे जगत् में परिवर्तन आ जाएगा। धर्म में युग परिवर्तन लाएगा। अध्यात्म क्षेत्र में युगों-युगों तक 'दादा' महकेंगे।

पूर्वकाल के शास्त्र, वर्षों पहले देश काल के अधीन लिखे गए थे। जो कि इस पाँचवे आरे के लिए नहीं हैं। चौथे आरे के शास्त्र, चौथे आरे के अंत तक ही चल सकते हैं। इसीलिए अब नए शास्त्र और नई बातों की आवश्यकता है। और अब आप्तवाणियाँ इस युग के नए शास्त्र माने जाएँगे। आप्तवाणी में दादाश्री ने आज की भाषा में मौलिक बात कही है।

दादाश्री कहते हैं कि मोक्ष में जाने के लिए करना कुछ भी नहीं है, सिर्फ समझना है। बात को यथार्थ रूप से समझने से ही मोक्ष होगा। आप्तवाणी से यही सातत्यपूर्ण समझ प्राप्त होती है। शास्त्र समान यह आप्तवाणी जब 'लोगों के हाथों में आएगी, तब अन्य शास्त्रों की ज़रूरत नहीं रहेगी।'

इस ज्ञानवाणी के शब्द तो शायद पहले जैसे ही लगें, शब्दों में फर्क नहीं है लेकिन भाव में फर्क है। अंदर जाने के बाद उग निकलेगा, ऐसा परिवर्तन होगा। जीवंत वाणी, पढ़ते ही बहुत आनंद आएगा और ये शब्द अंदर उतरेंगे तो पापों को भस्मीभूत कर देंगे।

ज्ञानीपुरुष के एक ही शब्द पर से पूरा शास्त्र बन सकता है, एक ही शब्द! क्योंकि दादा, भेदविज्ञानी कहलाते हैं, जो वेदों के *ऊपरी* हैं। उनसे हर एक प्रकार का स्पष्टीकरण मिलता है। जैनों के, वैष्णवों के, क्रिश्चयनों के, मुस्लिमों के सभी खुलासे आप्तवाणी से प्राप्त होंगे। चौदह आप्तवाणियों में लोगों को अनुकूल आए ऐसी सरल भाषा में पूरा मोक्षमार्ग बता दिया है, कुछ भी बाकी नहीं रखा है।

लाखों लोगों ने विविध विषयों पर अनेक प्रश्न पूछे हैं और दादाश्री ने उनके जवाब अत्यंत मुक्तभाव से, सहजता से, साइन्टिफिक तरीके से, संपूर्ण अविरोधाभास और पूर्ण सैद्धांतिक तरीके से दिए हैं। इतना ही नहीं बल्कि मूल वस्तु, मूल तत्त्वों को सरलता से समझ सकें ऐसे उदाहरण देकर बातें की हैं। और वे उदाहरण रोज़मर्रा के जीवन व्यवहार में स्वयं हाज़िर होकर, मुक्ति का अनुभव करवा देते हैं।

दादाश्री अत्यंत करुणा से कहते हैं, 'हमारा सिर्फ एक ही वाक्य अगर ज्यों का त्यों समझ में आ जाए और उल्लास आए तो कल्याण हो जाएगा। क्योंकि यह तो प्रत्यक्ष सरस्वती है।' हमारे अहोभाग्य हैं कि हमें इस काल में यह वाणी प्राप्त हुई। अत्यंत कल्याणकारी यह साक्षात् सरस्वती, जगत् के कोने-कोने तक पहुँचे और इसके आराधन से पूरे जगत् का कल्याण हो, ऐसी अंतर की अभिलाषा है।

- जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

शास्त्ररूपी इन आप्तवाणियों से होगा युग परिवर्तन

आप्तपुरुष की वाणी

प्रश्नकर्ता : दादा, आपकी आप्तवाणी पुस्तक मिली। आप्तवाणी का अर्थ क्या है?

दादाश्री : आप्तपुरुष की वाणी। तीर्थंकर हों या ज्ञानीपुरुष, वे 'आप्त' माने जाते हैं। एक तो तीर्थंकर साहब को आप्तपुरुष कहते हैं और तीर्थंकर साहब के मातहतों को, आप्तपुरुष कहते हैं।

आप्तपुरुष अर्थात् जो संसार में भी सर्वस्व प्रकार से विश्वास करने योग्य और ठेठ मोक्ष तक विश्वास करने योग्य हों, तो वे आप्तपुरुष कहलाते हैं। ठेठ मोक्ष तक ले जाएँ, वे ऐसे पुरुष होते हैं। और आप्तपुरुष की वाणी आप्तवाणी कहलाती है!

ज्ञानीपुरुष की वाणी आप्तवाणी कहलाती है और दूसरा, तीर्थंकरों की वाणी आप्तवाणी कहलाती है अन्य सभी की वाणी आप्तवाणी नहीं कहलाती।

'आप्तवाणी' अर्थात् क्या? आप्तवाणी अर्थात् धार्मिक, सांसारिक, व्यावहारिक दृष्टि से और हर प्रकार से विश्वास करने योग्य।

जगत् के कल्याण के लिए चौदह आप्तवाणियाँ

प्रश्नकर्ता : दादा, अब तक आपकी कितनी आप्तवाणियाँ प्रकाशित हुई हैं?

दादाश्री : आप्तवाणी का पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवा, छठा, सातवाँ और आठवाँ भाग छप चुका है। अभी नौवाँ छप रहा है और बाद में दस, ग्यारह, बारह, तेरह और चौदह। चौदह आप्तवाणियाँ प्रकाशित होंगी, क्योंकि रामचंद्र जी के वनवास के कितने साल थे?

प्रश्नकर्ता : चौदह साल।

दादाश्री : जैनों में गुण स्थानक कितने हैं?

प्रश्नकर्ता : चौदह।

दादाश्री : हाँ, चौदह गुण स्थानक, अत: चौदह आप्तवाणियाँ प्रकाशित होंगी। ये चौदह आप्तवाणियाँ चौदह गुण स्थानकों के समान हैं। चौदह गुण स्थानकों को भेद दें ऐसी हैं। सभी चौदह गुण स्थानकों का त्याग करवानेवाली हैं ये आप्तवाणियाँ। ब्रह्मांड में कितने लोक हैं?

प्रश्नकर्ता : चौदह।

दादाश्री : इसीलिए हमारी चौदह आप्तवाणियाँ तैयार होंगी।

प्रश्नकर्ता : आप चौदह लोक के नाथ हैं, इसीलिए ऐसा कह रहे हैं?

दादाश्री : चौदह लोक के नाथ, इस हेतु से ही ये सभी चौदह आप्तवाणियाँ बनेंगी।

प्रश्नकर्ता : ऐसा भी कहते हैं न कि, चौदह पूर्व का ज्ञान।

दादाश्री : हाँ। चौदह पूर्व का ज्ञान।

यानी ये दादा, इन चौदह आप्तवाणियों से पूर्ण कर देंगे सभी कुछ।

प्रश्नकर्ता : दादा, चौदह आप्तवाणियाँ ही तैयार होंगी या उनसे आगे भी?

दादाश्री : नहीं। चौदह आप्तवाणियाँ ही बनेंगी। आगे और भी बन सकें, उतना माल तो बहुत है, लेकिन चौदह में सब कुछ आ जाएगा।

हमें शासन देवों का आदेश है कि चौदह आप्तवाणियाँ तैयार करो, और चौदह बनेंगी। यानी चौदह आप्तवाणी प्रकाशित होंगी और अपनी जो मासिक मैगज़ीन (दादावाणी) है, वे भी अगर बारह महीनों की इकट्ठी करके रखोगे न, तो वह भी पुस्तक ही है। पुस्तक किसे कहते हैं? जिसे बार-बार पढ़ने का मन हो। वह रद्दी में देने की चीज़ नहीं है। कोई रद्दी में देता है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं, कोई नहीं देता।

दादाश्री : बारह इकट्ठी हो गई तो पुस्तक बन जाएगी। तो एक तो पंद्रह रुपए में मासिक मिली और पंद्रह रुपए में ही पुस्तक भी मिल गई!

यानी यह पूरा साइन्स है। मैं सोलह सालों से विज्ञान ही बोल रहा हूँ, फिर भी आज तक समाप्त नहीं हुआ है? कितनी रिकॉर्ड हैं? (दादाजी टेपरिकॉर्डर पर हाथ मारते हैं)

प्रश्नकर्ता : 932वीं चल रही है।

दादाश्री : 932 रिकॉर्ड तैयार हो चुकी हैं और अभी भी रोज़ की दो-तीन रिकॉर्ड होती रहती हैं। कई सालों से जो बोल रहा हूँ, वह सारा इनमें रिकॉर्ड हो चुका है। और उनसे कितनी ही पुस्तकें बनेंगी। अत: यह तो बहुत बड़ा साइन्स है, बहुत बड़ा विज्ञान है और पूरे जगत् के कल्याण के लिए है। ये आप्तवाणी की पुस्तकें तो हज़ारों सालों तक खूब काम आएँगी।

शास्त्र लिखे जा सकें, ऐसी वाणी सत्पुरुष की

कृपालुदेव ने कहा है न, उन्होंने परिभाषा दी है कि सत्पुरुष वही हैं, जिन्हें निशदिन आत्मा का उपयोग रहे। जो शास्त्रों में नहीं है, सुनी नहीं है फिर भी अनुभव में आए, ऐसी जिनकी वाणी है। जिनकी वाणी ऐसी होती है कि जिससे नया शास्त्र लिखा जा सके। कोई उनका एक शब्द भी सुन ले तो मोक्ष में चला जाए, क्योंकि वचनबल सहित है। जिनकी वाणी शास्त्ररूपी ही होती है। नए शास्त्र ही हैं। हमारा एक भी अक्षर को बदला नहीं गया है, शास्त्रों की रचना हो रही है सारी। जिनकी वाणी अविरोधाभासी है, सैद्धांतिक वाणी है। तीर्थंकरों की वाणी जैसी ही है, सिर्फ थोड़ा सा ही फर्क है। केवलज्ञान के सिद्धांत से कुछ कम, कुछ ही कम प्रकार का सिद्धांत है। उससे अलग नहीं है।

केवलज्ञान के अंश समाए हैं इन आप्तवाणियों में

हम शास्त्रों से भी कुछ विशेष बताते हैं। जो शास्त्रों में देखे न गए हों, लोगों ने न देखे हों ऐसे, हम जो कहते हैं, वे केवलज्ञान के अंश कहलाते हैं।

केवलज्ञान हमारी उँगली छूकर निकल गया। प्राप्त तो हुआ लेकिन केवलज्ञान पच नहीं सका। 356 पर रह गया। 360 तो होना ही चाहिए। चार डिग्री कम रह गया तो फेल हो गया तो आपके काम आया। फेल नहीं हुए होते तो फिर चले जाते न!

केवलज्ञान की परीक्षा में फेल हो गए इसीलिए तो आपके हिस्से में आए, वर्ना कहाँ से आते? अगर पास हो गए होते तो एकदम से चले जाते। ये तो कितने ही लोगों का कुछ पुण्य जगा होगा, इसीलिए हम फेल हो गए। हमें इसमें हर्ज नहीं है।

चार डिग्री कमीवाली, केवलज्ञान वाणी

प्रश्नकर्ता : आप जो 356 कह रहे हैं, वह क्या है?

दादाश्री : डिग्री होती है न, 360 डिग्री नहीं होती?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तो भगवान 360 डिग्री पर हैं। हमारी 356 हैं, अभी चार डिग्री कम हैं, फिर भी हम सेन्टर में जाकर आए हैं, इसीलिए हमारा किसी के साथ मतभेद नहीं है, किसी रेडिअस (डिग्रीवाले) के साथ मतभेद नहीं है।

प्रश्नकर्ता : केवलज्ञान होने के बाद आयुष्य का जितना बंध होता है, तब तक तो 'केवल' रह सकता है न?

दादाश्री : केवलज्ञानवाले किसी के काम नहीं आते न। कोई (किसी) भी काम में नहीं, सिर्फ दर्शन करने के काम आते हैं।

प्रश्नकर्ता : क्यों? क्या तीर्थंकर उपदेश नहीं देते?

दादाश्री : नहीं, सिर्फ तीर्थंकर ही देशना देते हैं। और कोई देशना नहीं देते। केवलज्ञानी स्वयंभू होते हैं और स्वयं मोक्ष में जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : शंका के समाधान करते हैं।

दादाश्री : शंका के समाधान, वह सब कहने मात्र के लिए है। (केवली को तो) कृपा से ही केवलज्ञान हो गया। पूरा रास्ता नाप-नापकर नहीं देखा है। यह सब तो तीर्थंकरों का ही काम है अथवा हमारे जैसे ज्ञानीपुरुष का। ज्ञानीपुरुष तो खटपटिया कहलाते हैं। खटपटिया वीतराग। करुणाभाव, लेकिन संपूर्ण वीतरागी नहीं हैं न!

केवलज्ञान में चार अंश कम हैं, सिर्फ उतना ही कम आपको मिलेगा, और कोई परेशानी नहीं आएगी। इतना ही कम आएगा, चार अंश। और दुनिया को अभी उसकी ज़रूरत भी नहीं है, अंतिम चार अंशों की, जिसकी वजह से केवलज्ञान को देखना रुका हुआ है। केवलदर्शन समझ में आ गया है। जगत् समझ में आ गया है। उत्पन्न होना, विनाश होना, ध्रुव (स्थिर) रहना, वह सब समझ में आ गया है। लेकिन ज्ञान में नहीं आया है, इसीलिए केवलज्ञान रुका हुआ है। इसी वजह से चार डिग्रियाँ रुकी हुई हैं।

अहो! कैसी दशा इन आप्तपुरुष की

पंद्रह साल पहले मैं जो कहता था, उसकी तुलना में आज मेरी वाणी में बहुत गूढ़ार्थ रहता है। और अभी भी कुछ कहा नहीं जा सकता। चार डिग्री में से तीन डिग्री प्राप्त कर लें और एक ही डिग्री की कमी रहे! अर्थात् नहीं, हमें उसकी ज़रूरत भी नहीं है। क्योंकि हमें मोक्ष में ही निरा सुख है और 22 सालों से हमने मोक्ष के अलावा अन्य कुछ देखा ही नहीं है। क्योंकि हमें विषय का विचार नहीं आता, कषाय का विचार नहीं आता। किसी की कोई चीज़ नहीं चाहिए। जिनमें ममता, अहंकार नाम मात्र को भी नहीं हैं, जिनमें बुद्धि भी नहीं है। सिर्फ तीर्थंकर ही ऐसे थे कि जिनमें बुद्धि नहीं थी और दूसरे ये अक्रम विज्ञानी। क्रमिकमार्ग के ज्ञानियों में भी बुद्धि होती है और हम में बुद्धि नहीं है।

यह सर्वस्व पापों का नाश करनेवाला मार्ग है। (ज्ञानविधि में) एक घंटे में तो सभी पापों को नष्ट करके निकाल देते हैं। अब यह क्या मेरी सत्ता है? भगवान की कृपा है। जिनके अंदर चौदह लोक के नाथ प्रकट हो गए हैं, ऐसे ज्ञानीपुरुष को एक बार नमस्कार (वंदन) किया हो न तो भी कितने ही जन्म कम हो जाते हैं!

आप्तवाणियों में ठेठ केवल तक का ज्ञान

प्रश्नकर्ता : आप 356 डिग्री पर बैठे हैं, तो आपको हर एक डिग्री का जो ज्ञान है, वह आप्तवाणी में देना चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, इसीलिए तो पूरी चौदह

आप्तवाणियाँ छपेंगी। उन सभी में जब इकट्ठा होगा, तब उनमें पूरा ज्ञान समा जाएगा। चौदह आप्तवाणियों में केवलज्ञान तक का सारा माल समा जाएगा।

सिर्फ चार डिग्री की कमीवाला ही केवलज्ञान है यह। अर्थात् ये शास्त्र ही कहलाएँगे। शास्त्र तो लोगों की समझ में भी नहीं आते।

आप्तवाणियाँ लाई हैं युग परिवर्तन

प्रश्नकर्ता : दादा आपकी, आप्तवाणी अद्‌भुत है। पढ़ते ही अहो-अहो हो जाता है!

दादाश्री : यह तो युग परिवर्तन हो रहा है। धर्म का युग परिवर्तन हो रहा है। उसी के लिए ये पुस्तकें हैं। पहली व दूसरी आप्तवाणी में तो, जगत् क्या है? हमें क्या लेना-देना? ऐसा कहना चाहते हैं और तीसरी आप्तवाणी में आत्मा के स्पष्टीकरण दिए हैं। तीसरी तो ओहोहो... बात बन गई है! इसीलिए तो शोर मच रहा है न! और भी अन्य आएँगी वे सारी अलग ही प्रकार की होंगी।

इनमें तमाम शास्त्र समा जाएँगे और शास्त्रों से भी उच्च प्रकार का ज्ञान, शास्त्र तो विरोधाभासी लिखे गए हैं। इसमें तो रास्ते दिखाए गए हैं पद्धतिपूर्वक, लगातार, अविरोधाभास। तभी लोगों का कल्याण होगा न! शास्त्रों से तो लोग उलझ गए हैं। बात समझने जैसी है। यह ऐसा नहीं होना चाहिए। देखना न, वैसे तो बहुत बदलाव हो जाएगा। जब पुस्तकें बोलेंगी, तब ज्ञानियों की ज़रूरत नहीं रहेगी। यह पुस्तक बोले, ऐसी है।

प्रश्नकर्ता : दादा पुस्तक का हेतु ऐसा है कि जो यहाँ प्रत्यक्ष नहीं आ सकते, उन्हें पुस्तक द्वारा समझ मिलेगी, परोक्ष की तरह?

दादाश्री : वह चाहे जो भी हो, लेकिन पुस्तक पढ़ते ही लोगों को ऐसा लगता है मानो कि दादा बोल रहे हैं और मैं सुन रहा हूँ। वह चाहे जो भी हो, लेकिन जगत् में परिवर्तन आनेवाला है वह तय है, यह बात 100% तय है।

प्रश्नकर्ता : जगत् कभी भी बदला ही नहीं है। काल के अनुसार रहता है। कुछ भी नहीं बदलता, कितने ही धर्मगुरु आए और गए।

दादाश्री : नहीं, नहीं। बदलेगा। ये पुस्तकें बोलेंगी सब। यह अच्छा बोलेंगी। और ये पुस्तकें बोलती ही हैं। लोगों को हेल्प (मदद) करती हैं। अभी तो कई लोगों का अच्छा होगा। पूरे जगत् का कल्याण होगा।

आप्तवाणी और अपनी अन्य पुस्तकों के आधार पर और ज्ञानियों की परंपरा के आधार पर लगभग 50% लोग 'रिलेटिव' और 'रियल' का भेद प्राप्त करेंगे।

आप्तवाणियों ने रचे नए शास्त्र

आज के शास्त्रों में लिखा है, 'सत्य बोलो।' क्या कोई बोल सकता है? 'शांति रखो, दया रखो,' अरे, किस तरह रखेंगे लोग? इसीलिए फिर लोगों ने पुस्तकें ऊपर रख दीं। कुछ काम नहीं आतीं, समझ में नहीं आतीं; इसीलिए इन्हें ऊपर रख दो। भगवान का सिर्फ नवकार मंत्र ही रहने दो, और कुछ रखने जैसा नहीं है। नए शास्त्रों की आवश्यकता है जो आज के काल में फिट हो जाएँ।

ये चौथे आरे के शास्त्र पाँचवे आरे में फिट नहीं हो पाएँगे। इसीलिए इन नए शास्त्रों की रचना हो रही है। अब ये नए शास्त्र ही काम आएँगे। चौथे आरे के शास्त्र, चौथे आरे के एन्ड (अंत) तक ही चलते हैं, फिर वे काम नहीं आते क्योंकि पाँचवे आरे के लोग अलग, बातें अलग और व्यवहार भी अलग ही प्रकार का हो गया। आत्मा तो वही है लेकिन व्यवहार पूरा ही बदल गया न!

प्रश्नकर्ता : दादा, लेकिन भगवान की मूल बात तो वही रहेगी न?

दादाश्री : मूल बात तो आत्मज्ञान। आत्मज्ञान कॉमन है। बाकी अन्य सभी बातें समय के अधीन हैं। यानी कि देशकाल के अधीन हैं। अगर आज हम भगवान की बातें रूपक में लाएँ कि, 'दया रखो, शांति रखो, समता रखो,' तो लोग क्या कहेंगे? अरे, इस काल में कहीं ऐसा होता होगा? क्योंकि वैसा काल नहीं है, यह काल में एडजस्ट नहीं हो सकता। यानी कि काल के अनुसार उपदेश दिया है। 250 साल में बदलाव आया है। पार्श्वनाथ भगवान ने चार महाव्रत दिए थे, तो इन्होंने (महावीर भगवान ने) पाँच कर दिए। 250 सालों में तो इतना ज़्यादा बदलाव आ गया, और भी बहुत बदलाव किया था। 250 सालों में इतना ज़्यादा बदलाव! क्योंकि काल के अनुसार सब बदलता ही रहता है। तो अब तो 2500 साल हो गए, तो कैसे चलेगा?

प्रश्नकर्ता : लेकिन वीतरागी विज्ञान तो एक ही होता है न, दादा?

दादाश्री : उन सभी की एक ही बात में समानता थी कि, 'राग-द्वेष मत करो,' चौबीस तीर्थंकरों की एक जैसी बात थी। सिर्फ इतना ही कॉमन। आपका किया हुआ, सब कुछ हम निभा लेंगे लेकिन आप राग-द्वेष मत करना, इतना ही हम कहना चाहते हैं। राग-द्वेष में कॉमन।

प्रश्नकर्ता : हाँ। वह तो ठीक है, लेकिन राग-द्वेष न हों, उसके लिए क्या करना चाहिए? इस बारे में सभी ने अलग-अलग बताया है, ऐसा कहना चाहते हैं आप?

दादाश्री : इसका कारण, वे क्या कहना चाहते हैं कि वे समय के अनुसार कहते हैं। जैसा समय। हाल में महावीर भगवान का शास्त्र चलता ही नहीं है, इसका क्या कारण है? समय! इस समय में फिट नहीं बैठता। क्योंकि चौबीसों तीर्थंकरों ने (देशकाल के अनुसार) अलग-अलग बातें कही हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, अलग-अलग कैसे कही होंगी? बात तो एक ही है।

दादाश्री : भगवान महावीर ने जो कहा और पार्श्वनाथ भगवान ने जो कहा, वह अलग-अलग। और नेमिनाथ भगवान ने जो कहा, वह अलग एवं ऋषभदेव भगवान ने जो कहा, वह अलग। सभी का अलग-अलग। कौन से शास्त्र को हम सही मानें?

अत: अब नए शास्त्र और नई ही बातों की ज़रूरत है। अत: ये आप्तवाणियाँ अब शास्त्र मानी जाएँगी।

हमारी वाणी को 'त्रिकाली वाणी' कहा जाता है। नए शास्त्र लिखे जा सकें, ऐसी यह वाणी। देखना तो सही, ये चौदह आप्तवाणियाँ हैं न वे नए शास्त्रों के रूप में काम आएँगी आगे जाकर। अभी तो कितनी ही जगहों पर ऐसा चल रहा है कि एक व्यक्ति यह पुस्तक पढ़ता है और पाँच-पचास लोग सुनते रहते हैं। ऐसा कितनी ही जगहों पर चल रहा है इन पुस्तकों पर से।

शास्त्रों में 'करना' है, यहाँ सिर्फ समझना है

अब तक सभी ने कहा कि, 'करो, करो, करो।' हम ऐसा नहीं कहेंगे। हम, 'करो, करो' ऐसा नहीं कहेंगे। किसी से भी 'ऐसा करो, वैसा करो,' ऐसा नहीं कहते। कर्ताभाव नाम मात्र भी नहीं होता। 'ऐसा करो, वैसा करो,' वह ज्ञानी की वाणी में नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : अगर करना नहीं है तो फिर क्या है?

दादाश्री : समझ से मोक्ष होता है, इसीलिए अपने यहाँ क्या है? समझ की ही बातें हैं, हमारे पुस्तकों में भी समझ की ही बातें हैं। अन्य कोई बातें हैं ही नहीं न! 'ऐसा करो या वैसा करो,' होता नहीं है न अपनी पुस्तकों में! हमारी सभी आप्तवाणियों में 'ऐसा करो या वैसा करो,' ऐसा कुछ भी नहीं होता।

हमारा एक ही वाक्य मोक्ष में ले जाए, ऐसा है। 'ज्ञानीपुरुष' के एक ही वाक्य की ज़रूरत है। मोक्ष में जाने के लिए शास्त्रों की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि 'ज्ञानीपुरुष' सीधा संपूर्ण मोक्षमार्ग बता देते हैं। अर्थात् वस्तुस्थिति में समझने की ज़रूरत है।

यह विज्ञान है, धर्म नहीं है। धर्म तो अब तक सभी पुस्तकों में लिखा हुआ ही है। धर्म में करना पड़ता है। इसमें करना नहीं है। सिर्फ समझना है। यह विज्ञान है और संपूर्ण विज्ञान है।

अन्य शास्त्रों से भिन्न ये आप्तवाणियाँ

मैं लोगों से कहता हूँ कि 'शास्त्र पढ़ने के लिए हैं, करने के लिए नहीं हैं,' इस वाक्य को कब समझेंगे लोग?

प्रश्नकर्ता : किसी ने ऐसा बताया ही नहीं कि 'शास्त्र करने के लिए नहीं, जानने के लिए हैं।'

दादाश्री : जानने के लिए हैं, लेकिन लोग ऐसा कब करेंगे? बात को समझेंगे तभी न? लेकिन समझेंगे कैसे?

प्रश्नकर्ता : जब उनके पास ऐसे शास्त्र पहुँचेंगे कि जिनमें कर्तापन नहीं है, समझने का ही है। जब इनकी बहुतायत हो जाएगी, तब पहलेवाले अपने आप निकल जाएँगे न?

दादाश्री : हाँ, निकल जाएँगे। फिर उन शास्त्रों की ज़रूरत नहीं रहेगी। ये आप्तवाणियाँ बहुत इफेक्टिव (असरकारक) हैं। वीतराग शास्त्रों के सभी लॉ (नियम) इसमें आ जाते हैं।

शास्त्रों में जो लिखा गया है न, उससे आगे तो बहुत कुछ जानना बाकी है। इसीलिए मैंने चौदह आप्तवाणियाँ प्रकाशित करने के लिए कहा है, लेकिन वे भी शास्त्ररूप में ही हैं। मैं एक्ज़ेक्ट (यथार्थ) देखकर कहता हूँ। यानी इनमें तो सीधा देखकर डाइरेक्ट कहते हैं जबकि शास्त्रों में तो सब लिखा गया है। वे पुरुष चले गए, उसके बाद लिखा गया है। लिखने में भूलचूक होने की (संभावना) रहती है न?

अर्थात् शास्त्रों में अनुमान से लिखा होता है, जो पुस्तकों में लिखा होता है, वही होता है न! और क्या हो सकता है! शास्त्रों और पुस्तकों में पूरा लौकिक ज्ञान ही लिखा रहता है। अलौकिक कहीं भी नहीं लिखा गया है।

ज्ञानीपुरुष की वाणी बुद्धि रहित

प्रश्नकर्ता : जितना वाणी में आ जाए, वह उतने अंशों तक वह बौद्धिक नहीं कहलाएगा?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कोई नियम नहीं है। वाणी में तो 'डाइरेक्ट' प्रकाश पूर्णरूप से और 'इनडाइरेक्ट' प्रकाश भी पूर्णरूप से आ सकता है। वाणी को इससे कुछ लेना-देना नहीं है।

प्रश्नकर्ता : 'डाइरेक्ट' प्रकाश पहुँचाने के लिए, माध्यम की मर्यादा वाणी के आड़े आती है या नहीं?

दादाश्री : 'डाइरेक्ट' प्रकाशवाली वाणी स्याद्वाद होती है। किसी को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो, ऐसी वह वाणी होती है। बुद्धिवाली वाणी से किसी को दुःख हो सकता है, क्योंकि बुद्धिवाली वाणी में अहंकार रूपी 'पोइज़न' (ज़हर) होता है।

हमारे पास 'डाइरेक्ट' प्रकाश है इसीलिए उसे ज्ञान कहते हैं। 'डाइरेक्ट' प्रकाश को ज्ञान कहा है और 'इनडाइरेक्ट' प्रकाश को बुद्धि कहा है। अब, यह 'इनडाइरेक्ट' प्रकाश, वह पूरे जगत् का ज्ञान जानता है, कोई व्यक्ति भले ही पूरे जगत् के तमाम सब्जेक्टस समझ जाए, फिर भी वह अहंकारी ज्ञान है, वह बुद्धि है। और जो थोड़ा सा ही जानता है, खुद के आत्मा के बारे में ही जानता है, और कुछ नहीं जानता, लेकिन निर्अहंकार ज्ञान ही ज्ञान है आपकी समझ में आया न? बुद्धि नहीं है, इसका यह खुलासा, आपको समझ में आ रहा है न?

अर्थात् जिसमें बुद्धि न हो, ऐसा व्यक्ति शायद ही कभी, किसी जन्म में, कोई बिरला ही होता है। वर्ना नहीं हो सकता। सभी बुद्धिशाली, सभी (क्रमिक के) ज्ञानी भी बुद्धिशाली होते हैं। एक से बढ़कर एक बुद्धिशाली होते हैं! बुद्धिवाले तो बल्कि सामनेवाले को डाँटते हैं कि मैं तुझ से ज़्यादा बुद्धिशाली हूँ, ऐसा कहते हैं। बुद्धिशाली तो वाद-विवाद करते हैं, जबकि यहाँ वाद-विवाद नहीं होते।

अर्थात् बुद्धि और ज्ञान के बीच का भेद आपकी समझ में आया? मेरा फुल (संपूर्ण) प्रकाश, हमेशा उजाला रहता है। बिजली चली जाए तो हम केन्डल (मोमबत्ती) जलाते हैं, लेकिन जैसे ही बिजली आ जाए तो केन्डल बुझा देते हैं न? तो मुझे उसकी ज़रूरत ही क्या है? एकदम फुल प्रकाश! उसमें पूरे वर्ल्ड की सारी चीज़ें दिखाई देती हैं।

समा गया है जीवंत ज्ञान इस वाणी में

प्रश्नकर्ता : दादा, कई बार आपके मुख से 'एक्ज़ेक्ट' शब्द निकलते हैं। जो गीता में या भागवत् में लिखे हैं, वही निकलते हैं।

दादाश्री : हाँ, 'एक्ज़ेक्ट' ही निकलते हैं।

प्रश्नकर्ता : उस समय ऐसा लगता है कि आप कब पढ़ने गए थे? अगर मुझ से कोई कहे कि दादाजी ने (गीता या भागवत) पढ़ी है तो मैं नहीं मानूँगा।

दादाश्री : ना, ना, 'मानूँगा नहीं,' ठीक है। और पढ़े हुए शब्दों में यह वाणी नहीं होती। यह वाणी तो करेक्ट (सटीक) वाणी!

प्रश्नकर्ता : दादा की आप्तवाणी का मैं गीता के हर-एक श्लोक से कम्पैरिज़न (तुलना) करता हूँ। दादा की आप्तवाणी में जो प्रश्नोतरी है और दादा द्वारा दिए गए जो जवाब हैं, उनकी तुलना जब मैं गीता के हर एक श्लोक से करता हूँ कि इसमें कैसा है, तो वह ज्ञान 'एक्ज़ेक्ट' है दादा।

दादाश्री : उसमें तो सब 'एक्ज़ेक्ट' है, उसमें फर्क नहीं है। आपको (जवाब) माँगना आना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा, गीता में जो सरल भाषा में कहा गया है, वही चीज़ आपने भी कही है। लेकिन ये बातें कितनी सहजरूप से निकल जाती हैं।

दादाश्री : मूल वस्तु में भेद होता ही नहीं है न! भेद तो, जहाँ मूल वस्तु नहीं होती वहाँ भेद होता है। हमने तो ठेठ तक के सारे खुलासे कर दिए हैं। पुराणों में भी ऐसे खुलासे नहीं हैं। सभी (शास्त्रों) में जो खुलासे नहीं हैं, वैसे सारे खुलासे यहाँ पर दे दिए हैं। अभी और भी जितने खुलासे चाहिए उतने हो सकते हैं। जितने पूछोगे उतने खुलासे मिलेंगे क्योंकि यह अक्रम विज्ञान है, परिपूर्ण है। प्रकाश वही है, ज्योति वही है। ज्योति में फर्क नहीं है, विज्ञान में फर्क है। यह रास्ता विज्ञान का है और वह ज्ञान का रास्ता है। दो घंटें में ही समझदार बन जाता है न?

शब्द वही लेकिन 'ये' समाधि देते हैं

वाणी सब एक जैसी लगती है। शब्द तो डिक्शनरी (शब्दकोश) के ही हैं न? कहीं बाहर से आएँगे क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं आएँगे।

दादाश्री : शब्द तो जो डिक्शनरी में हैं, वही हैं न? हम जो कहते हैं, वैसा ही अन्य ज्ञानी कहते हैं हमारे जैसा, लेकिन उससे कोई फायदा नहीं होता। उनका उगता नहीं है जबकि यह उग जाता है, यह जीवंत ज्ञान है और वह शुष्क ज्ञान है, यानी पपीते के पेड़ पर फूल तो लगते हैं लेकिन फल नहीं आते। यह फल देता है।

सिर्फ इतना ही है कि यहाँ पर बाहर के लोगों जैसा व्यवहार नहीं रखना है। क्योंकि हमारा एक-एक शब्द आज्ञा के रूप में ही समझना चाहिए।

एक-एक शब्द से अनंता-अनंत शास्त्र लिखे जा, सकें ऐसा होता है एक-एक शब्द। शब्द तो औरों जैसे ही लगते हैं, शब्दों में कोई फर्क नहीं है, भाव में फर्क है। अंदर जाने के बाद उग निकलते हैं, परिवर्तन हो जाता है। सारी जलन भस्मीभूत कर देते हैं। इस संसार की आधि-व्याधि और *उपाधी* (बाहर से आनेवाला दुःख) के जो संताप हैं न, उन्हें भस्मीभूत करके समाधि दशा में रखते हैं।

यह वाणी पढ़ते हुए बहुत आनंद आता है। शास्त्रों जैसी लगती है लेकिन आकाश-पाताल का फर्क होता है। ये सच्ची हकीकत का वर्णन करते हैं, और वे अपनी समझी हुई बात का वर्णन करते हैं।

हर एक शब्द शास्त्र समान

ऐसा है कि ज्ञानीपुरुष के एक ही शब्द से अनंत शास्त्र रचे जा सकते हैं। ज्ञानीपुरुष के हर एक शब्द में अनंत शास्त्रों संक्षेपरूप से हैं। हमारा वाक्य ब्रह्म वाक्य कहलाता है, जिससे अनंत शास्त्रों की रचना हो सकती है।

इसे समझ ले और सीधा चले तो काम निकाल दे। एकावतारी बन सके, ऐसा यह विज्ञान है। लाखों जन्म कम हो जाएँगे! इस विज्ञान से तो राग भी खत्म हो जाते हैं और वीतरागी बन जाते हैं। अगुरु-लघु स्वभाववाले बन जाते हैं इसीलिए इस विज्ञान का जितना लाभ उठाया जा सके, उतना कम है। लेकिन जिसे जितना समझ में आएगा उतना ही उसका काम होगा।

'एक ही बाल की नोक पर दुनियाभर के शास्त्र विराजमान हैं।' ऐसा कह दिया है, लेकिन अगर लोगों की समझ में आ जाए तो उनका काम बन जाए। यह तो सरस्वती है। मरता हुआ व्यक्ति भी जीवंत हो जाता है।

ज्ञानीपुरुष गप्प लगाएँ, तो भी वह सामनेवाले के लिए दवाई के रूप में है। गप्प लगाएँ तो भी सामनेवाले के लिए दवाई बन जाती है। क्योंकि ज्ञानी की गप्प है न? गप्प है, लेकिन किस की? हाँ, जिनके शब्द शास्त्र कहे जाते हैं। जिनका हर एक शब्द शास्त्र माना जाता हैं। उनकी गप्प भी शास्त्र ही मानी जाएगी न! ज्ञानीपुरुष के एक भी शब्द को सामान्य नहीं मानना है, उनका एक-एक शब्द शास्त्र लिखने लायक होता है।

ज्ञानीपुरुष की वाणी आगम स्वरूप

ज्ञानीपुरुष जो भी कहें उसमें से कुछ भी छानने जैसा नहीं होता। जो कहें, वह सभी शास्त्र ही है! वे चौबीस तीर्थंकरों के आगम की ही बातें बताते हैं! जो वाणी बेजोड़ कहलाती है, जो वाणी शास्त्र लिखने योग्य होती है।

हमारे मुख से बोला हुआ लिख लेंगे न, तो वह संपूर्ण शुद्ध शास्त्र। सभी शास्त्रों में कुछ न कुछ मिलावट हो गई है, बादवाले लोगों ने ऐसा सब किया है।

ज्ञानी की वाणी अर्थात् क्या? सारे नए शास्त्र ही रचती है और भी 45 आगम लिख दे। ज्ञानीपुरुष के एक ही शब्द में भगवान के 45 आगम हैं। ज्ञानी के एक ही शब्द में सारे आगम समा जाते हैं। अनंत आगम हैं। ये जो चौदह आप्तवाणियाँ हैं, ये सभी आगम का सार है। इसीलिए फिर लोगों को आगमों की ज़रूरत नहीं रहेगी।

हमारा एक-एक शब्द आगम है। पूर्ण आगम है, लेकिन इसका पृथक्करण समझ में आए तो। हाँ, 'भुगते उसी की भूल' कहते हैं, वह आगम ही है पूरा। व्यवहार में तू न्याय मत ढूँढना, यह पूरा आगम है। अगर इतना ही समझ ले न, तो बहुत हो गया।

नए वेद रचे जा सकते हैं इस वाणी से

हम भेदविज्ञानी कहलाते हैं। इस जगत् का भेद क्या है? उसके इस भेद को जो जानता है उसे भेदविज्ञानी कहते हैं। भेदविज्ञानी अर्थात् क्या? चार

वेदों के *ऊपरी* (वरिष्ठ) कहलाते हैं। और चार वेदों के *ऊपरी* यानी जो दूसरा वेद लिखवा दें। बहुत काल बीत जाने की वजह से पुराने वेद में कोई भूल-चूक हो सकती है लेकिन ये जो लिखवाएँगे, वह बिल्कुल सही होगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, आपकी इस वाणी से नए वेदों की रचना कर सकते हैं?

दादाश्री : हाँ, हाँ, वास्तविकता है यह। 'नए शास्त्र लिखने हों तो लिख,' ऐसा कहा है। फिर से चार वेद लिखने हों तो लिख। और फिर वेद लिखनेवाले क्या समझते हैं? कहते हैं 'भगवान ने लिखवाए थे, और वेद बहुत पुराने हैं'। सत्य नया हो या पुराना, सत्य छुपाया नहीं जा सकता, क्योंकि आत्मा नया ही है। वेद पुराने हो जाते हैं, आत्मा तो फ्रेश ही रहता है। वेद का क्या कोई दोष है बेचारे का? इसीलिए मैंने कहा कि, लाओ, नए वेद बनाते हैं, तब पढ़ेंगे। पुराण-वुराण वगैरह सभी।

ज्ञानी की वजह से नए शास्त्रों की रचना होती है! लोगों को समझ में नहीं आता और खुद का ही उल्टा करते रहते हैं। ज्ञानी तो सभी शास्त्रों के *ऊपरी* कहलाते हैं। जो चार वेदों में नहीं लिखा होता, वह ज्ञानी के पास होता है।

सभी शास्त्रों की साररूपी यह अद्‌भुत वाणी

अपनी इन आप्तवाणियों में तमाम शास्त्र समा जाएँगे और लोगों को नए शास्त्र के तौर पर, वेदांतियों और जैनिज़म दोनों के लिए ये ही शास्त्र चलेंगे। अभी भी साथ में चलने लगा है।

हमारी आप्तवाणी तो इसलिए लिखी गई है कि बाहर के लोगों को 'आत्मा क्या है और क्या नहीं है, एवं परमात्मा क्या है और क्या नहीं है' इसका भान उत्पन्न करवाने के लिए है। किसी एक धर्मवालों के लिए नहीं लिखी गई हैं और ये चौदह आप्तवाणियाँ तो हेल्पिंग बन जाएँगी। सारे धर्म इनके अनुसार चलेंगे। सभी के लिए, पूरे वर्ल्ड के कल्याण के लिए लिखा है।

हमारी बात मुसलमानों को अपने कुरान जैसी लगती है। वैष्णवों को अपने धर्म जैसी लगती है। जैनों को अपने धर्म जैसी लगती है। सभी शास्त्रों का सार है यह सब। शास्त्रों दोहन करने से कभी सार नहीं निकलेगा। ज्ञानीपुरुष का एक ही वाक्य लेकर, अगर कोई बुद्धिशाली हो तो, पृथक्करण करे, तो शास्त्र बना सकता है। एक ही शब्द पर से शास्त्र!

प्रश्नकर्ता : यह जो वाक्य है न आपका 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स', इस पर से तो बहुत बड़ा शास्त्र बन सकता है।

दादाश्री : 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' तो बहुत समझने जैसी चीज़ है।

प्रश्नकर्ता : 'व्यवस्थितवाला और 'यह,' ये दोनों बातें कई प्राथमिक और अन्य परेशानियों को हल कर देनेवाली बातें हैं।

दादाश्री : बहुत! इसके बाद ही तो सभी को शांति हो जाती है, वर्ना शांति कैसे होगी? इतने सारे लोग शांति से, आनंद में रह सकते हैं, सिर्फ इसी वजह से न! यह साधन दिया है, इसी वजह से न! और इस खोज के लिए तो....मेरे कितने ही जन्मों की खोज है यह।

यह बुलबुला, बुलबुला यानी फूटनेवाली चीज़ को बुलबुला कहते हैं, यह बुलबुला फूट जाने के बाद लाखों सालों तक इस ज्ञान का एक अंश भी नहीं निकलेगा। इसीलिए कह रहा हूँ कि 'पूछना हो तो पूछ लेना।' बाद में अस्सी हज़ार सालों तक तो कोई भी (ज्ञान) नहीं निकलेगा। इसीलिए जितना पूछना चाहो पूछ लेना। जितना पूछोगे (उतना) ज्ञान बाहर आ जाएगा। इसीलिए तो कहा है न कि जितनी

पुस्तकें प्रकाशित कर सको उतनी करो, तो ये सारी पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं।

प्रश्नकर्ता : यह तो बहुत उत्तम काम है।

ज्ञानीपुरुष जीवंत उपनिषद्

दादाश्री : यह तो अंतिम स्टेशन कहा जाता है। यहाँ तो परिप्रश्नेन (प्रश्नोत्तरी) होना चाहिए। जैसे कि महावीर भगवान से गणधर पूछते थे, और उसी से ये शास्त्र बने हैं। कृष्ण भगवान से अर्जुन ने जो पूछा, वही शास्त्र बन गया। उसी तरह अगर यहाँ भी पूछा जाएगा तभी शास्त्र बन सकेंगे। ये सारे शास्त्र, यहाँ जितनी भी पुस्तकें बनी हैं, वे पूछने से ही बनी हैं। लाखों सवाल पूछे जाने के बाद फिर पुस्तकें बनती हैं।

इसीलिए कहता हूँ कि प्रश्न पूछकर सारे खुलासे कर लेने चाहिए। नए शास्त्र लिखने में हर्ज नहीं है। प्रश्न पूछकर खुलासे करने हैं। हम सारे खुलासे देने के लिए तैयार हैं।

ज्ञानी से सभी तरह के खुलासे मिल सकते हैं। वहाँ फिर मन बिल्कुल भी उलझा हुआ नहीं रहता। उलझा हुआ मन, वही संसार है। मन की उलझन ही संसार है। ज्ञानी के पास मन उलझन में नहीं रहता। मन खुल जाता है और मन का मालिक बन जाता है। ज्ञानी के पास मन वश हो जाता है। पूरा जगत् मन को वश करता है। जबकि यहाँ पर खुद का मन ज्ञानी के वश में हो जाता है। यह तो जीवंत उपनिशद् कहलाता है। ये दादाजी तो जीवंत उपनिषद् कहलाते हैं।

मालिकी रहित वाणी है यह

हमारी ये सब पुस्तकें हैं न, ये सब शास्त्र रूपी हैं।

प्रश्नकर्ता : शास्त्र तो ज्ञानियों द्वारा ही लिखे गए हैं और यह तो सीधी बात है। ज्ञानी की वाणी ही शास्त्र है।

दादाश्री : साष्टा पुरुष के वचन ही शास्त्र हैं। हाँ, वही शास्त्र हैं। हमारी जो चौदह आप्तवाणियाँ बनेंगी, वे सभी शास्त्र (समान) हैं। क्योंकि इस वाणी का कोई मालिक नहीं है। यह जो वाणी बोली है, वह मालिकी रहित है। मैं खुद इसका मालिक नहीं हूँ। यह मालिकी रहित वाणी है। इसी को शास्त्र कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : ठीक है, लेकिन परंपरा तो भगवान की, तीर्थंकरों की है न?

दादाश्री : परंपरा का सवाल नहीं है। यह जो वाणी है, उस पर किसी का मालिकीपन नहीं है। तीर्थंकरों का भी नहीं, मेरा भी नहीं, किसी का भी नहीं। यह मालिकी रहित वाणी है।

पाएगा जग अनोखा लाभ, इस वाणी द्वारा

प्रश्नकर्ता : आपकी इस वाणी में, वह लाइट है। यह उसकी प्रकाशित करने की शक्ति है और उसमें वस्तु दिखाई देती है। ऐसे सब सटीक उदाहरणों से, वस्तु सरलता से समझ में आ जाती है उसे।

दादाश्री : हाँ, समझ में आ जाती है।

प्रश्नकर्ता : वह समझ में आ जाता है। जबकि पुस्तक में से तो पता ही नहीं चल पाता कि 'वस्तु' क्या है?

दादाश्री : अगर पता चल जाता तो क्या शुक्रवार बीत नहीं जाता! एवरी डे फ्राइडे, शनिवार आता ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : ज़बरदस्त शास्त्रों की रचना होगी। इस वाणी से तो कितने ही शास्त्र ही रचे जाएँगे।

दादाश्री : अभी और भी लोग लाभ उठाएँगे, तुम देखना तो सही। अभी आगे तो देखना, अभी तो यह प्राइमरी स्टेज में है।

प्रश्नकर्ता : दादा, पूरा जो, यह लिखते हैं न,

फिर उस पर बातचीत और विचारणा होती है। एक विज़न आ गया है, कि कैसे सभी शास्त्रों की रचना होगी, कितने बनेंगे, किस-किस बारे में होंगे, जैसे कि पूरा, 'कमिंग इवेन्टस कास्ट दियर शेडोज बिफोर,' उस तरह की पद्धतिपूर्वक रचना दिख रही है।

दादाश्री : क्योंकि जगत् की ऐसी स्थिति नहीं पुसाएगी। जगत् सड़ रहा है, निरंतर तड़प रहा है। जैसे मछलियाँ तड़पती है; वैसे तड़प रहा है।

मेरी इच्छा तो ऐसी है कि 'जो सुख मैंने पाया, वह सुख जगत् के लोग भी पाएँ,' और आज का यह संघर्षण खत्म हो जाए। बंद हो जाए। फिर से रचना हो जाए जगत् में। जब तक पाँचवा आरा है तब तक भगवान का शासन है, तो तब तक के लिए तो जीव को थोड़ा सुख रहे।

नहीं रहेगी ज़रूरत फिर अन्य शास्त्रों की

प्रश्नकर्ता : नौवीं आप्तवाणी इतनी सुंदर है तो चौदह आप्तवाणियाँ कैसी होंगी?

दादाश्री : सभी शास्त्रों में जितना ज्ञान प्रकट हुआ है न, वह सारा इन चौदह आप्तवाणियों में आ जाएगा। तब फिर लोगों को बाहर के अन्य शास्त्रों की हेल्प लेने की ज़रूरत नहीं रहेगी। ये नए शास्त्र, ये नई बातें, यह सब नया ही रखा जाएगा। यह सरल भाषा है, इसलिए लोगों को अच्छी लगती है। और इसमें पूरा मोक्षमार्ग बता दिया है, कुछ भी बाकी नहीं रखा है।

तले तक की खोज है यह। अगर किसी को तले (गहराई) तक जाना होगा तो वहाँ पहुँचा देगी। पहले के शास्त्र खो जाएँगे और ये आप्तवाणियाँ काम करेंगी।

अपूर्व, अमूल्य वाणी यह

अभी तक लोगों ने शास्त्रों की प्राप्ति ही नहीं की थी। तो यह शास्त्रों से परे की बात है। अगर एक बात सुनने के लिए लाख रुपए दें न तो भी ऐसी बात सुनने को न मिले।

यह फिर किसी काल में नहीं मिलेगी। यह बात फिर से सुनने को नहीं मिलेगी, थी भी नहीं। शास्त्र की बातें नहीं हैं, शास्त्रों से आगे की बातें हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, यह तो अपूर्व बात है।

दादाश्री : हाँ, अपूर्व। अपूर्व यानी पहले कभी सुना न हो, पढ़ा न हो, श्रद्धा में न हो, वैसा। और बिल्कुल शोर्ट कट!

यह तो आपका कोई ज़बरदस्त पुण्य होगा कि आपको यह बात सुनने को मिल रही है। यह अद्‌भुत वस्तु तो कहाँ से सुनने को मिले?

शास्त्रों की उलझनों को सुलझा देगी यह आप्तवाणी

अमरीका में भादरण के एक पटेल कहने लगे कि मैंने आप्तवाणी पढ़ी है। वर्ल्ड में कहीं भी न हो ऐसी आप्तवाणी है यह। उन्हें इस आप्तवाणी से अगाध प्रेम हो गया है। ऐसा! ऐसा! ऐसा ज्ञान!!! और वह भी हमारे गाँव मे! हमारे कुटुंब के भाईयों में अगाढ़ प्रेम देख गया, आश्चर्य कहलाएगा न?

ऐसी तो चौदह आप्तवाणियाँ बनेंगी और वे शास्त्रों के रुप में होगी क्योंकि निबेड़ा लाती हैं और अब तक शास्त्रों ने जो उलझनें पैदा की हैं, उपमा देने की वजह से उलझनें पैदा हो गई हैं। उन उपमाओं को अगर निकाल दें न, तो सारी उलझनें खत्म हो जाएँगी।

आप्तवाणी सरल ग्रामीण शैली में

ज्ञानीपुरुष अर्थात् इस वर्ल्ड में कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो कि उन्हें जानना बाकी हो। ज्ञानी वर्ल्ड की 'ऑब्ज़र्वेटरी' कहलाते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन आप जितना जानते हैं, क्या उतना ज़ाहिर नहीं कर सकते?

दादाश्री : ज़ाहिर ही कर रहे हैं, और उसी से आप्तवाणियाँ लिखी जाएँगी। यह इसलिए है कि लोगों को पिछली परिभाषाओं का एक भी शब्द समझ में नहीं आता। इसलिए यह अपनी भाषा में, ग्रामीण भाषा में सब को दिया है, और इसे सभी समझ जाते हैं कि 'धर्म क्या है और आत्मा क्या है?'

शास्त्रों में तो पारिभाषिक शब्द होते हैं। जैसे डॉक्टरों के खुद के पारिभाषिक शब्द होते हैं, वैसे ही शास्त्रों के खुद के पारिभाषिक शब्द होते हैं। लोग कैसे समझेंगे इसे? शास्त्रों की परिभाषा समझने की शक्ति कहाँ से लाएँगे? शब्द बोलते रहते हैं, बस उतना ही। इससे कुछ फायदा नहीं हो सकता। इसीलिए प्योर (शुद्ध) गुजराती भाषा में है यह, इसीलिए तुरंत समझ में आ जाता है सभी को। बच्चों को समझ में आ जाता है और स्त्रियों को भी समझ में आ जाता है।

प्रकट हुई आप्तवाणी आज की भाषा में

सभी शास्त्र आज की भाषा में होने चाहिए। आज की लैंग्वेज़ में होने चाहिए। पहले की लैंग्वेज़ में नहीं चलेंगे और पारिभाषिक शब्द नहीं चलेंगे। अगर शब्द सरल होंगे तो लोग ज्ञान को समझ सकेंगे।

पारिभाषिक शब्द किसी भी बात को तुरंत समझने नहीं देते। इसीलिए हमारी वाणी में पारिभाषिक शब्द नहीं हैं, क्योंकि मूल में से उत्पन्न हुई है।

अन्य सभी पुस्तकों में पारिभाषिक शब्द क्यों हैं? मैंने कहा, वह तो लोन पर लिया हुआ ज्ञान है और यह तो वास्तविक ज्ञान है। यह बीज में से निकला हुआ ज्ञान है और अन्य पुस्तकों में फल का का ज्ञान है। लोन पर लिए हुए, पहले उपयोग किए हुए शब्द, उन्हीं का वापस उपयोग करते हैं। वही चल रहा है और क्या चल रहा है?

वे पारिभाषिक शब्द हैं न, सेट होने चाहिए न? उन्हें एडजस्ट करना बहुत मुश्किल है। हमने पारिभाषिक शब्द नहीं रखे। पारिभाषिक शब्द किसने रखे हैं कि जिन्हें एक्ज़ेक्ट अनुभव नहीं हुआ है, उन्होंने रखे हैं। जिन्हें एक्ज़ेक्ट अनुभव हो गया है, वे अपनी भाषा में चाहे कैसे भी कह सकते हैं।

महावीर भगवान ने उस समय जो कहा था न, वह भाषा ऐसी थी कि उस समय के लोग समझ सकें। उस बात को 2500 साल बीत गए। आज के लोगों को तो अपने पिता की लिखी हुई चिट्ठी भी समझ में नहीं आती। 'यह क्या लिखा है?,' करके पिता पर भी चिढ़ते रहते हैं, तो इन शास्त्रों को कैसे समझ सकेंगे?

आज के इस पंचमकाल के जीव ये नहीं समझ पाएँगे तो कुछ का कुछ हो जाएगा। नहीं समझने के कारण चुपड़नेवाली दवाई पी जाएँगे। आज के डरे हुए लोगों में शास्त्रों की पारिभाषिक शब्द समझने की शक्ति नहीं है। पूरे दिन भय, भय, भय। स्थिरता नाम मात्र के भी नहीं है, तो ऐसे में पारिभाषिक शब्द कैसे समझेंगे? आचार्य महाराजों को भी पारिभाषिक भाषा समझ में नहीं आती।

इसीलिए एक महाराज ने मुझे खुले दिल से कहा कि, 'अगर आपकी चौदह आप्तवाणियाँ छप जाएँगी तो लोगों को आधार मिल जाएगा। क्योंकि आजकल शास्त्र समझ में नहीं आते, फिट नहीं बैठते। पारिभाषिक शब्द समझ में नहीं आते। लोगों में सामर्थ्य नहीं है इनका अर्थ समझने का।

इसलिए हमारी ग्रामीण, गुजराती भाषा में चौदह आप्तवाणियाँ तैयार होंगी। मेरी सरल भाषा में, इतनी सुंदर बातचीत की है। यानी सादी-सरल भाषा में यह केवलज्ञान तक की सारी बातें समझा देगी।

निकली वाणी केवलज्ञान में देखकर

प्रश्नकर्ता : दादा तो तीर्थंकरों की वाणी बोलते

हैं और इस काल में वह फिट हो जाती है। आपने कहा कि इस काल में महावीर की वाणी फिट नहीं हो सकती, लेकिन दादा महावीर की ही वाणी बोल रहे हैं!

दादाश्री : नहीं, लेकिन मैं जो बोल रहा हूँ न, वह शास्त्रीय भाषा नहीं है। मैं लौकिक भाषा में बात करता हूँ, बिल्कुल सरल भाव से । इसलिए बहुत सारे खुलासे हो गए हैं।

प्रश्नकर्ता : एक-एक प्रश्न के, हर तरफ के।

दादाश्री : लाखों प्रश्न पूछे जाते हैं, उनके एक्ज़ेक्ट जवाब देने पड़ते हैं। चाहे कैसे भी प्रश्न पूछे जाएँ, लेकिन ये जो जवाब दिए हैं, वे सब तो दुनिया में कभी नहीं हुआ है, वैसे जवाब हैं सारे। लोगों ने भी कुछ पूछना बाकी नहीं रखा है न? और हमने जवाब देना बाकी नहीं रखा। और सारे जवाब करेक्ट हैं। सारे जवाब केवलज्ञान से दिए हैं।

शब्दों को परखकर देखा, निकले अविरोधाभास

केवलज्ञान के प्रश्नों के जवाब तो महावीर भगवान ने बहुत दिए हैं, लेकिन केवलज्ञान से नीचे के जवाब किसी ने नहीं दिए हैं। मतलब केवलज्ञान से नीचे के ज्ञान के प्रश्नों के जवाब दिए ही नहीं हैं न! इसीलिए तो वे लेखक पूछ रहे थे कि, 'दादा, आप कहाँ से (देखकर) बता रहे हैं,' यह सब? शास्त्रों में से नहीं लग रहा है यह। ये सब शास्त्रों में से नहीं है और हमारी बुद्धि काम ही नहीं कर रही लेकिन बात सही है,' तब मैंने कहा, 'केवलज्ञान में देखकर बता रहा हूँ।'

ज्ञान में से निकला हुआ एक भी शब्द बदलना नहीं पड़ा है। 1962 से लेकर आज तक निकले हुए शब्दों को बदलना नहीं पड़ा। इसीलिए हमें ऐसा लगता है कि यह बात बदलनी नहीं पड़ेगी। बदलने का विचार तक भी नहीं आया।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा बाद में तो बदल ही जाते हैं न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है। बाद में हमें फिर परखकर देखना (तावी जोवुं) चाहिए न? हमें परखना तो चाहिए न कि करेक्ट (सही) है या नहीं? हमें फॉर-कास्ट (आगाही) करने का क्या अधिकार है? लेकिन परखने से पता चल जाता है। परखकर देखना चाहिए न? आपकी भाषा में 'परख' शब्द को क्या कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : टेस्ट। वही शब्द है। परखना और भी अच्छा शब्द है, इससे ज़्यादा समझ में आता है।

दादाश्री : ग्रामीण शब्द हैं न सारे। हमारी भाषा का रूप तो बहुत ग्रामीण है, हं। इसका वास्तविक रूप ग्रामीण है।

प्रश्नकर्ता : 'ग्रामीण' शब्द आपकी तरफ का है। सौराष्ट्र में हम इसे '*तळपदी*'(ग्रामीण) कहते हैं।

दादाश्री : *तळपदी*। *तळपदी* यानी दूसरे शब्दों में इसे ग्रामीण कहते हैं। लेकिन वास्तव में *तळपदी* कहते हैं। *तळपदी* से ज़्यादा समझ में आता है। मुझे बहुत सी चिट्ठियाँ आती हैं कि, 'आपकी *तलपदी* भाषा की क्या बात करें, हमें बहुत मज़ा आता है!' ऐसा कहते हैं। हाँ, हमने अन्य भाषा सीखी ही नहीं है! कोई बड़ी भाषा सीखी ही नहीं हैं। बड़े-बड़े शब्द याद भी नहीं आते।

प्रश्नकर्ता : बड़े-बड़े शब्दों की भाषा तो प्रोफेसरों को आती है।

दादाश्री : उन लोगों को आती है क्योंकि उन्होंने उसका अभ्यास किया है न! उनका विषय है। मेरा तो यह विषय नहीं है न! मुझे सिर्फ इस विषय पर बोलना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : जिसे आप परखना कहते हैं?

दादाश्री : परखने में हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो उसे परीक्षा करना कह सकते हैं? लेकिन उसमें भाव नहीं आता।

दादाश्री : 'परीक्षा', शब्द से समझ में नहीं आएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन भाव भी नहीं आता।

दादाश्री : भाव नहीं आता। अरे, 'तावी जोवुं' (परखकर) कहा न तो इसका अंग्रेजी शब्द मिलेगा ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : गुजराती शब्द भी दूसरा नहीं मिलेगा।

दादाश्री : गुजराती भी नहीं मिलेगा। इसलिए हमें यही शब्द बोलना पड़ेगा। कितना गूढ़ भावार्थ है हर एक शब्द में।

समझ सकते हैं सभी अपनी भाषा में

प्रश्नकर्ता : अन्य किसी शब्द में ऐसा भाव नहीं आएगा?

दादाश्री : हाँ। इसीलिए जब अंग्रेजी में आप्तवाणी छापने की बात की गई, तब मैंने कहा कि, 'भाई, मूल बात समझ नहीं पाएँगे क्योंकि अंग्रेजी में इतने शब्द ही नहीं होते। अंग्रेजी भाषा उनकी समझ के अनुसार होती है। हर एक की भाषा उनकी खुद की समझ के अनुसार होती है। अभी तक तो वे पुनर्जन्म भी नहीं जानते, तो ये शब्द कैसे जान पाएँगे? लेकिन कुछ न कुछ, मार्ग की प्राप्ति करेंगे। उँगली निर्देश समझ में आ जाएगा। मूल गूढ़ भावार्थ समझ में नहीं आएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन भ्रांति होगी या नहीं? उन्हें उलझन होगी या नहीं, भाषा नहीं समझने के कारण?

दादाश्री : अपनी भाषा में तो समझ जाएगा न फिर। हर एक अपनी-अपनी भाषा में समझ जाता है। और हमारी, ज्ञानी की वाणी किसे कहते हैं? जिसे हर एक अपनी भाषा में समझ लेता है और उसे उलझन पैदा नहीं होती। कहने का मतलब यह है। लेकिन लोगों ने कहा कि 'भगवान की भाषा गाय और कुत्ते अपनी-अपनी भाषा में समझ लेते थे।' ऐसा नहीं, हर एक जाति के लोग अपनी-अपनी भाषा में समझ जाते थे। अनपढ़ स्त्रियाँ भी अपनी भाषा में बात समझ जाती थीं कि क्या कहना चाहते हैं। यानी अध्यात्म में पढ़ाई (अभ्यास) की ज़रूरत नहीं है। पढ़ाई की हो या न की हो, क्या फर्क पड़ता है!

शब्द केवलज्ञान शक्ति के आधार पर

यह शब्दों की वेल्डिंग...अगर हर एक वाक्य याद रहे और हर एक शब्द की वेल्डिंग समझ में आ जाए न तो काम हो जाए। कौन-कौन से शब्दों में वेल्डिंग किया गया है? शब्द तो वही हैं।

ये सारे शब्द पढ़ाई के आधार पर नहीं निकले, अंदर केवलज्ञान शक्ति के आधार पर निकले हैं। पढ़ाई के समय तो हम आइस्क्रीम खाने चले जाते थे। और मन में खटकता रहता था कि पंद्रह साल सिर्फ भाषा सीखने में बिगाड़ दिए, इसके बजाय प्रभु को ढूँढने में बिगाड़े होते तो प्रभु मिल जाते।

मेट्रिक पास नहीं हूँ इसीलिए मुझे अंग्रेजी बोलना नहीं आता, लेकिन यह तो कुदरती निकल रहा है। कई अंग्रेजी के शब्द बोले गए हैं न, इसीलिए लोग मुझ से पूछते हैं कि 'दादाजी कहाँ तक पढ़े हैं? आप तो बहुत पढ़े-लिखे होंगे? आपकी अंग्रेजी तो बहुत अच्छी है,' कहते हैं। मैंने कहा 'यही तो देखने की बात है, यह कुदरती निकल रहा है। जो मुझे पता भी नहीं हैं, वैसे शब्द निकल रहे हैं।' इसलिए मैं कहता हूँ कि यह 'टेपरिकॉर्डर' है। मेरा बोला हुआ नहीं है यह सब। और अगर मैं बोल रहा हूँ तो फिर उसे माई स्पीच कहते हैं। माई स्पीच यानी पोइज़न कहा जाता है। जबकि इसे सरस्वती कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन आप यह जो अंग्रेजी भाषा को गुजराती में ले आए हैं, यह बहुत वास्तविक किया है। जैसे कि 'फाइल का *निकाल*' करने को कहा है।

दादाश्री : जब मुझे 'फाइल' का कोई गुजराती शब्द नहीं मिला तब मैंने 'फाइल' रहने दिया। मुझे एप्रोप्रिएट (योग्य) गुजराती शब्द नहीं मिला इसलिए फाइल रहने दिया और लोगों को अच्छा भी लगा, एट-ए-टाइम। फाइल नं-वन, टू, थ्री, फोर, फाइव। लोग समझते हैं कि यह कौन सी फाइल है? जब सब बैठे होते हैं तब कई लोग तो ऐसा कहते हैं कि 'आज मेरी फाइल नंबर टू बहुत सिक (बिमार) है।' तो सामनेवाला मुझ से पूछता है कि, 'ये क्या बात कर रहे हैं? किसकी बात कर रहे हैं?' कहता हूँ, 'आपकी समझ में नहीं आएगा।' यह लोक भाषा नहीं है, यह सांकेतिक भाषा है।

अलौकिक की मुहर

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी के शब्दों में चेतनता का संग है, क्या इसलिए नि:शंक हो जाते हैं?

दादाश्री : हाँ, तभी हो सकते हैं न! वर्ना कैसे हो सकेंगे? उनका वचनबल है। और वाणी सजीवन है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, उनका संग है। कल कहा था न कि 'अलौकिक की मुहर' लगी है।

दादाश्री : 'अलौकिक की मुहर!' यह अच्छा शब्द है और उस समय यह शब्द निकल गया, वर्ना मैं कहाँ से ढूँढता! मैं क्या इनकी डाइरी में देखने जाता? उस समय अपने-आप निकल गया। यानी इसके पीछे सेटिंग की हुई है? सेटिंग है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : सेटिंग नहीं की है, यह तो साहजिक है। दादा, सेटिंगवाले शब्दों तो नि:शंक हो ही नहीं सकते।

दादाश्री : और दूसरा एम्पावर (सत्ता देना) शब्द निकला। एम्पावर से भी ज़्यादा यह जो 'मुहर' शब्द कहा न, वह बहुत अच्छा लगा!

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, आप जब बोलते हैं तब जब ऐसे वाक्य निकलते हैं, तब हम ज्ञानी की मुखमुद्रा देखते रहते हैं।

दादाश्री : वह दर्शन, उस समय दर्शन कर लेने चाहिए, ऐसे-ऐसे कर लेना। पूर्ण स्थिति के दर्शन! जब वाक्य निकलते हैं न, तब ज्ञाता-द्रष्टा रूप से निकलते हैं। निकलने के बाद थोड़ा इधर-उधर हो जाता है। अत: उसी समय दर्शन कर लेने चाहिए बाद में दो आने (थोड़ा-बहुत) कच्चा रहता है।

प्रश्नकर्ता : अलौकिक मुहर, ऐसा जो शब्द निकला, यानी टेप से निकला लेकिन क्या वह तुरंत टेप होकर बाहर निकला?

दादाश्री : हाँ, तुरंत।

प्रश्नकर्ता : ताज़ी-ताज़ी टेप में से बाहर निकला?

दादाश्री : हाँ, ताज़ी। और यह टेप किस आधार पर निकलती है? पूछनेवाले के अनुसार अंदर टेप की सेटिंग हो जाती है। यह जो पूछनेवाला आया है, वह क्या पूछनेवाला है, वह भी यह टेप अंदर जानती हैं, सारी टेप तैयार हैं। एक के पीछे दूसरी और उसके पीछे तीसरी, ऐसे सेटिंग रहती ही है। लोग तो बीच में दखल (करते हैं) इसलिए पता नहीं चलता। अंदर यह कैसा क्रम बना हुआ है, कितना सुंदर है!

और लोग तो गर्वरस चखने के लिए बोलते हैं कि, 'मै बोला, कितना अच्छा बोला!' यह तो पोइज़न डाला। इससे कल्याण नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : और आपने तो आश्चर्य व्यक्त

किया। आपने कहा कि, 'यह शब्द कहाँ से निकला?' यों आश्चर्य व्यक्त किया।

दादाश्री : हाँ, नए ही शब्द निकले हैं। 'पूरा जगत् नवाज़ेगा,' कैसे निकले हैं ये शब्द।

जिसे कोई काट न सके, ऐसी यह वाणी

हम तो निष्पक्षपाती हैं। देह के लिए भी और वाणी बोली जाती है उसके भी, संपूर्ण निष्पक्षपाती हैं। यह वाणी जो निकल रही है, उसे हम ही बोलते हैं, और हम ही सुनते भी हैं। क्योंकि हमारे पास तो रिसीवर भी है इसीलिए भूल नहीं हो सकती।

हमारे पास यह देन है दादा भगवान की कि हमारे मुख से एक अक्षर भी इधर से उधर नहीं हो सकता। एक अक्षर का या एक मात्रा भी इधर से उधर नहीं हो सकती, यानी बदला जा सके, ऐसा नहीं है, इसीलिए आपको अगर इसका अर्थ पूछना हो तो मुझे पूछकर देखो। जो वाणी बोलता हूँ न, वह ऐसी निकलती है कि जिसे काटा नहीं जा सकता। यह जो टेपरिकॉर्ड निकल रही है न, उसका एक भी वाक्य ऐसा नहीं है कि जिसे काटना पड़े, कोई नहीं काट सकता। एक भी शब्द नहीं काटा जा सकता। ये तो शास्त्ररूपी ही हैं।

एक भी वाक्य काटा नहीं जा सकता, और अगर कोई काटेगा तो उसे जोखिमदारी आएगी। हमने ऐसा लिखा है कि अगर तीर्थंकर मिटाएँगे तो तीर्थंकरों की भी जोखिमदारी आएगी। वीतराग वाणी है, यह तीर्थंकरों की वाणी है।

त्रिकाल सिद्ध, सैद्धांतिक बात

ज्ञानीपुरुष की बात तो त्रिकाल सिद्ध कही जाती है। उन्होंने अगर एक बार कुछ कहा हो, तो तीर्थंकर भी वही बात कहते हैं और वे भी वही बात कहते हैं। अर्थात् ये सब इसमें (टेपरिकॉर्ड में रिकॉर्ड) होकर सीधा पुस्तकों में प्रकाशित होता है। इसमें से एक शब्द भी कोई इधर-उधर नहीं करते। इसी से तो यह 'आप्तवाणी' पुस्तक बनी है। और अब अन्य पुस्तकें भी बनेंगी। लोगों को ज़रूरत तो पड़ेगी न? सब से पहले हमें अपना काम निकाल लेना है!

चेतन को स्पर्श करके निकली हुई चेतन वाणी

प्रश्नकर्ता : अन्य पुस्तकें पढ़ते हैं, तो उनमें चेतन नहीं दिखाई देता जबकि आप्तवाणी पढ़ने में चेतन दिखाई देता है।

दादाश्री : ऐसा है न कि आप्तवाणी तो डाइरेक्ट (सीधी) चेतन को स्पर्श करके निकली हुई वाणी है। बाकी, किसी जगह चेतन वाणी होती ही नहीं! सिर्फ ज्ञानीपुरुष की वाणी ही शुद्ध चेतन को स्पर्श करके निकली हुई है, इसलिए यह वाणी चेतन जैसी कहलाती है। चेतन वाणी अर्थात् जिसका असर होता है।

हमारी इस आप्तवाणी का एक-एक शब्द मोक्ष में ले जाएगा। यह अनुभव वाणी है, प्रैक्टिकल वाणी है। और यह तो मुझे जो बरतता है वह कह रहा हूँ। अर्थात् साथ में अनुभूति का स्वाद भी आता है।

यह मौलिक वाणी, सभी के लिए कल्याणकारी

ये सारी जो आप्तवाणियाँ बनी हैं, वे और कौन सी पुस्तक में मिलेंगी?

प्रश्नकर्ता : किसी पुस्तक में नहीं मिलेंगी।

दादाश्री : क्योंकि जिस दशा में यह वाणी निकली है न, उस दशा में जितने भी जीव आए, वे मौन हो गए थे। इसलिए कुछ नहीं बोले, तो फिर ऐसा लिखा कहाँ होगा? इसलिए अगर आप पूरे हिन्दुस्तान की सारी पुस्तकों में भी देखोगे तो इसके जैसा एक अक्षर भी नहीं मिलेगा। 'गॉड इज़ नॉट क्रिएटर' ऐसा सब मिलेगा। पहली दो आप्तवाणियों में जगत् का वर्णन है, वैसा सब मिलेगा। लेकिन आत्मानुभव की बातें हैं न, आगे आनेवाली कई

आप्तवाणियों में आएँगी। किसी ने कभी सुना नहीं होगा, वैसा अनुभव होगा उनमें।

प्रश्नकर्ता : दादा, यह तो मौलिक ही है न?

दादाश्री : मौलिक ही है, वस्तु।

प्रश्नकर्ता : एक-एक सीढ़ी ऊपर जा रही है आप्तवाणी में।

दादाश्री : दिनोंदिन आप्तवाणियाँ बहुत ऊपर तक जाएँगी। पूरे जगत् के लोग खुलासा पाएँगे इसमें से। निकालेंगे सब, यही लोग निकालेंगे। आप्तवाणियों में से सारे खुलासे पा लेंगे, और उसी की ज़रूरत है। वर्ना ये लोग तो, कुछ का कुछ हो गया है।

अनुवाद होगा आप्तवाणियों का

इन आप्तवाणी पुस्तकों की तो हर तरफ से माँग है। ये तो शास्त्रों का स्थान ले लेंगी।

अर्थात् जितना यह माल पड़ा है न, उतना सब पुस्तकों में प्रकाशित हो जाएगा, उसके बाद ये हिंदुस्तान के लोग, ऐसे नहीं हैं कि छोड़ दें। एक पुस्तक मिलनी चाहिए।

छापनेवाले मिलेंगे। अभी तो इसकी तो एक-एक पुस्तक खोजकर इंग्लिश में छापेंगे। इंग्लिश में भी ज्ञान तो यही रहेगा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : और ये नए प्रकार के उदाहरण जो कभी सुने नहीं गए हों, ऐसे। मालिकी रहित वाणी है ही नहीं न, इस काल में! तीर्थंकरों के काल में थी ऐसी वाणी, मालिकी रहित वाणी।

अनुभव वाणी रिकॉर्ड करके, संचित हुई टेपरिकॉडर में

यह वाणी जो मैं बोल रहा हूँ न, इसका एक शब्द भी इन लोगों ने गिरने नहीं दिया। सारे शब्द इसमें (टेपरिकॉर्डर) संभालकर रखे हैं। और कुछ-कुछ लोग होते हैं न साथ में, वे तो तुरंत ही लिख लेते हैं सब।

यह लड़का भी ऐसा है। पढ़ाई भी कर रहा है और यहाँ पर निरंतर बैठा रहता है इसी में। मैं जितना बोल रहा हूँ उतना सब, एक-एक शब्द लिख लेगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा तो गणधर लिखते थे।

दादाश्री : गणधर जैसा लिखते थे, वैसा ही इनके हिस्से में आया है। गणधरों के हिस्से में तो कुछ ही आया था लिखने को। ऐसा अनुभव किसी ने नहीं लिखा है। अनुभव प्रकाश में आया ही नहीं है। अनुभव के स्टेशनों के आने तक की बातें ही प्रकाश में आई हैं। अनुभव होने के बाद तो मौन होकर निकल गए, अनुभव के स्टेशन पर आकर, अनुभव क्या है ऐसा थोड़ा सा बताकर। अन्य सारी बातें नहीं बताई। यह अनुभव वाणी तो ठेठ तक चलेगी और इसे तो, गणधरों से भी ज़्यादा अच्छा मिला है न?

पाताल फोड़कर निकली यह अलौकिक वाणी

प्रश्नकर्ता : यह वाणी, डाइरेक्ट ज्ञान की वाणी है न?

दादाश्री : नहीं, पाताल फट गया था उसमें से आई है यह जबकि अन्य पुस्तकों की वाणी टंकी में से आई है, पहले के रिजर्वोयर में से आई है। पुस्तक से लिया गया ज्ञान, कहते थे न, सतही तौर पर?

प्रश्नकर्ता : हाँ। सतही।

दादाश्री : और यह जो है वह (हमारा) अनुभव में से निकला है। इसलिए यह एक्ज़ेक्ट है, तभी तो फल देगा। वर्ना सतही बातें तो काफी पुस्तकों में है। शास्त्र की बातें ऊपर की सतह का पानी और ज्ञानी की बातें पाताल का पानी।

यह वाणी, आउट ऑफ स्टेन्र्डड की

प्रश्नकर्ता : दादा, इसे परा (प्रत्यक्ष) वाणी कह सकते हैं?

दादाश्री : परावाणी और अपरा, वे अलग चीज़ें हैं। यह वाणी तो अलग ही प्रकार की है। जिसे परावाणी कहते हैं न वह अलग है और यह वाणी अलग है। परावाणी लास्ट स्टेन्र्डड (कक्षा) में होती है और यह आउट ऑफ स्टेन्र्डड है। इतना फर्क है इसमें।

अब ऐसी वाणी शास्त्रों में तो होती नहीं! शास्त्र सिर्फ ग्रेज्युएट (स्नातक) लोगों के लिए नहीं लिखे गए। उनमें तो फर्स्ट स्टेन्र्डड से लेकर, अंत तक के सभी लोगों के लिए लिखा गया है। जबकि यहाँ तो आउट ऑफ स्टेन्र्डड की बातें चल रही हैं। यहाँ पर फर्स्ट स्टेन्र्डड या अन्य स्टेन्र्डड की बात ही नहीं है न! और शास्त्रों में ये बातें नहीं होतीं। ये अवर्णनीय बातें हैं। अवक्तव्य बात, जो आपको संज्ञा के रुप में कह रहे हैं। जिस बात को सीधी तरह से नहीं कह पाते उसके लिए शब्द ही नहीं होते, उन शब्दों को हम अन्य प्रकार से, संज्ञा से आपको बताते हैं।

निर्विशेष वाणी सुनते ही हो जाता है आत्मा जागृत

अर्थात् इस वाणी के लिए कोई विशेषण नहीं है। इसे अगर विशेषण देना हो तो स्याद्वाद कह सकते हैं। स्याद्वाद अर्थात् किसी भी जीव को, किसी भी धर्मवाले को वे शब्द दु:ख नहीं पहुँचाते। और परावाणी तो, चाहे कितनी भी श्रेष्ठ हो फिर भी वह कुछ स्टेन्र्डडवालों को ही अच्छी लगती है। अन्य स्टेन्र्डडवालों को नहीं सुहाती।

प्रश्नकर्ता : अन्य लोगों को अच्छी नहीं लगती?

दादाश्री : हाँ। अन्य लोगों को कड़वा लगता है। ये सारे मतभेदवाले कभी एक साथ बैठते हैं क्या? क्या होता है? आमने-सामने तकरार हो जाती है। क्योंकि भाषा ही ऐसी होती है, वह भाषा पक्षपाती होती है। और यह भाषा तो सभी को माफिक आती है। किसी को भी माफिक न आए, ऐसा नहीं है। सभी को माफिक आती है क्योंकि यह सीधी, डाइरेक्ट आत्मा की ही बात है। इसमें *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) जैसी चीज़ है ही नहीं। अर्थात् सुनने से उसका आत्मा जागृत होता जाता है, सिर्फ यहाँ बैठे रहने की ही ज़रूरत है, सुनते रहने की ही ज़रूरत है। भले ही समझ में आए या न आए, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हमें कहाँ परीक्षा देनी है? समझ में न आए तो कोई बात नहीं, बैठे रहो न यहाँ!

काल के अनुरूप वाणी, नवीन, उदाहरणों सहित

प्रश्नकर्ता : यह ऑरिजिनल टेपरिकॉर्डर बोलती है और शास्त्र बोलते हैं, यों दो प्रकार की वाणियाँ तो हैं न?

दादाश्री : शास्त्र तो श्रेष्ठ पुरुषों के वचन हैं जो उच्च स्टेन्र्डड में पहुँच चुके हैं। भ्रांतिवाले लोगों के स्टेन्र्डड। हर एक भ्रांति का अलग-अलग स्टेन्र्डड होता है। किसी ने सब से अंतिम, तत्त्ववाली बात की होती है, तो जितना शब्दों में आ सके उतनी बात कर सकते हैं। और वे दो बातें समझाते हैं। जली हुई रस्सी में साँप की भ्रांति हुई और सीप में चांदी दिखाई दी, ये दो शब्द, दस लाख सालों से! तो भाई और कोई शब्द ही नहीं मिले? (विकल्प) सब्स्टिट्यूट भी नहीं! ऐसे कोई ज्ञानी नहीं हुए? सब्स्टिट्यूट शब्द नहीं मिलते? देते ही नहीं हैं। वैसे के वैसे ही रहे।

वे उदाहरण ही गलत हैं। इसलिए व्यक्ति आगे नहीं बढ़ पाता। एक भी उदाहरण सही है ही नहीं। जली हुई रस्सी से साँप की भ्रांति होती होगी? सीप में किसी को चांदी दिखाई दी है क्या?

प्रश्नकर्ता : दूर कहीं रस्सी पड़ी हो तो साँप

जैसी ही लगेगी न? रात के अंधेरे में और क्या दिखेगा?

दादाश्री : उदाहरण ही गलत हैं। ऐसा सब्स्टिट्यूट होना चाहिए कि हमें विश्वास हो जाए। अनादि से ऐसा ही चल रहा है, झंझट चल रहा है।

प्रश्नकर्ता : आप तो सब्स्टिट्यूट उदाहरण देते हैं।

दादाश्री : मैंने तो कई उदाहरण दिए हैं। मैंने तो करेक्टनेस ओपन (सही बता कर) की और पूरी दुनिया करेक्ट कर दी है। सारे शब्द, सबकुछ बोल दिया। मैंने तो ऐसे कई उदाहरण दिए, एक नहीं बल्कि लाखों उदाहरण दिए हैं।

प्रश्नकर्ता : आपके उदाहरण ही ऐसे होते हैं कि फिर रास्ते में वही विचार आते रहते हैं।

दादाश्री : विचार आएँगे, मेरा कहने का मतलब यह है कि अगर आप उन विचारों में रहोगे न, तो आपका उतना ध्यान मेरे शब्दों में रहा अर्थात् मेरे ध्यान में रहे। इसलिए मैं ये उदाहरण देता हूँ कि उससे ध्यान मेरा रहता है तो आपका वह सब जल्दी धुल जाएगा।

इस चेतन वाणी को समझ ले तो काम निकाल दे।

प्रश्नकर्ता : दादाजी आपने कहा था कि अगर हमारी एक लाइन ठीक से समझ में आ जाए तो पार उतर जाएगा।

दादाश्री : वह अगर अंदर उतर गया तो काम ही हो जाएगा। इसमें इतनी दवाई है, इतनी बड़ी! अगर एक ही वाक्य अंदर उतर जाए न तो कल्याण हो जाए। इसलिए अगर उल्लास सहित पी ले और पाचन हो जाए, तो काम हो जाएगा न! उल्लास कब आएगा? जैसे-जैसे इसका सार समझ में आता जाएगा, जैसे-जैसे इसकी कीमत समझ में आएगी। जगत् ने तो डिवैल्यूएशन कर दिया है, तो फिर एकदम से वैल्यूएशन कैसे आएगा?

मेरा एक ही शब्द पकड़ ले न तो बहुत हो गया। मेरे एक ही शब्द का पालन करना न, तो वह मोक्ष की निशानी है। ज्ञानीपुरुष का एक ही शब्द अगर शरीर के अंदर गया तो काम हो जाएगा। एक ही शब्द! क्योंकि यह जीवंत वाणी है। आत्मा को स्पर्श करके जीवंत वाणी निकली है। यह चेतन वाणी है। फिर भी इसे रिकॉर्ड कहते हैं। क्या कहते हैं, वह समझने जैसा है। यह तो पूरा, साइन्स है सारा, गूढ़ साइन्स है।

समाया सिद्धांत आप्तवाणी में

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने तो आप्तवाणी में सारे शास्त्र रख दिए हैं। प्रत्येक प्रश्न का तुरंत हल मिल जाता है, स्वयंभू हल!

दादाश्री : ऐसा तो शास्त्रों में भी नहीं है। आप्तवाणी में तो पूरा सिद्धांत रख दिया है। सिद्धांत अर्थात् अविरोधाभास। विरोधाभास नहीं है जहाँ से देखो वहाँ से मेल बैठ जाता है, यह ऐसा सिद्धांत है।

अर्थात् अपना यह पूरा अक्रम विज्ञान सैद्धांतिक स्वरूप में है। जहाँ से पूछो वहाँ से सिद्धांत में ही परिणमित होता है, क्योंकि यह स्वाभाविक ज्ञान है। ज्ञान में आई हुई कोई भी चीज़, वापस अज्ञान में नहीं जाती, विरोधाभास उत्पन्न नहीं होता। हर एक के सिद्धांत को हेल्प करते हुए सिद्धांत आगे बढ़ता रहता है और किसी के भी सिद्धांत को तोड़ता नहीं है। पूर्वकाल जो वीतराग हो चुके हैं, यह उन्हीं का सिद्धांत है!

हर एक बात का खुलासा, प्रूफ सहित

विज्ञान अर्थात् सिद्धांत कहलाता है। सिद्धांत यानी जो अविरोधाभासी होता है, विरोधाभासी नहीं होता। प्रूफ बन जाता है। जहाँ देखो वहाँ प्रूफ हो जाता है। मैं बाइस सालों से बोल रहा हूँ, हर एक

शब्द प्रूफ ही है, और सारा इसमें (टेपरिकॉर्डर में) टेप कर लिया गया है, इसीलिए इसके प्रूफ तो हैं ही। मैं सारे प्रूफ देने के लिए तैयार हूँ। आज अगर कोई पूछे कि, 'ऐसा क्यों कहा था?' तो उसका प्रूफ देने के लिए तैयार हूँ।

हमारा कोई एक शब्द जो आज से दस साल पहले कहा गया हो और आप्तवाणियों में है, वह अगर कोई लेकर आए और खुलासा माँगे तो हमें देना ही पड़ेगा। आप कहो कि 'दादा, इसका खुलासा देंगे?' अरे! हम नियमबद्ध है। हमने जो शब्द कहा है उसका खुलासा देने के लिए हम नियमबद्ध हैं। यह गप्प नहीं है।

जितने भी शब्द मैं बोल रहा हूँ, वे सारे प्रूफ देने के राइट (अधिकार) से बोल रहा हूँ। बिना प्रूफवाला एक भी शब्द मैं नहीं बोल सकता। इनमें से एक भी शब्द यों ही नहीं है।

गैरज़िम्मेदारीवाला एक भी वाक्य हम नहीं लिख सकते और फिर लिखा भी है कि हम जितने भी शब्द बोल रहे हैं, उनका एक्सप्लेनेशन (विवरण) देने के लिए हम तैयार हैं।

प्रश्नकर्ता : चाहे कभी भी उनका खुलासा देंगे?

दादाश्री : कोई भी एक्सप्लेनेशन देने के लिए, छोटा बच्चा भी माँग सकता है। अगर एक्सप्लेनेशन न दे पाएँ फिर तो गप्प हाँकी है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : गैरज़िम्मेदारी वाला एक भी वाक्य नहीं है। हमारी यह वाणी 'बेजोड़' कही जाती है। ऐसी वाणी जो शास्त्र में लिखने योग्य है। हमारे कहे गए एक-एक शब्द से पुस्तकें छप रही हैं।

अहो! कैसी अद्‌भुत दशा यह, ज्ञानी की

प्रश्नकर्ता : दादा, अभी तक आपने इतना कुछ बोला है, इतना साइन्स निरावृत्त हुआ है। आप रोज़ कितने घंटे बोलते रहते हैं!

दादाश्री : जगत् के काम आएगा न! अभी अठारह हज़ार सालों तक जगत् में सभी के काम आएगा न!

प्रश्नकर्ता : मैंने देखा की पूरी ज्ञानविधि होने में कम से कम चार घंटे लगते हैं, हम निरंतर देख रहे हैं कि चार घंटे। चाहे ठंड हो, बारिश हो या गर्मी हो, अठहत्तर साल की उम्र में अन्य कोई डिस्टरबेन्स नहीं आता।

दादाश्री : वही तो नोट करने जैसी चीज़ है, नोट करने जैसी! तभी तो लोगों का कल्याण होगा न! वर्ना नहीं होगा न!

प्रश्नकर्ता : कई बार हम सोचते हैं, घंटेभर तक हम बोलते हैं, ज़्यादा से ज़्यादा दो घंटे, फिर कहते हैं कि 'अब बीच में ब्रेक दो।' फिर खड़े होकर इधर-उधर चक्कर लगा लेते हैं जबकि यहाँ तो निरंतर पूरा चलता ही रहता है।

दादाश्री : कई बार तो दस-दस घंटे तक वाणी निकलती ही रहती है। एक ही जगह पर स्थिर बैठकर दस-दस घंटे निकली है। इसके पीछे भी कुदरती बल होगा न! 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' हैं न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : गप्प नहीं है। जब काफी सारे लोगों का कल्याण होनेवाला हो, तब ऐसा होता है। वर्ना नहीं होता।

18 हज़ारों सालों तक पढ़ी जाएगी यह आप्तवाणी

ये वाणी अठारह हज़ार सालों तक हेल्प करेगी। जब तक महावीर भगवान का शासन रहेगा तब तक रहेगी। फिर बंद हो जाएगी। फिर वाणी पुस्तक,

मंदिर वगैरह बंद हो जाएगा। छठे आरे में न तो मंदिर हैं, न ही पुस्तकें.. बस आमने-सामने झगड़े, मारपीट एक दूसरे को कुचलना, ऐसा सब होगा! अभी तो अठारह हज़ार सालों तक यहाँ से महाविदेह क्षेत्र में, वहाँ चौथे आरे में जा सकेंगे। यह कैसी सुंदर वाणी है! मालिकी रहित वाणी देखी है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : सुनी भी नहीं? तो यह मालिकी रहित वाणी सुनो तो सही!

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : ये इतनी हज़ारों पुस्तकें, आप्तवाणी की प्रकाशित हुई हैं न, वे पचास-सौ सालों में उग निकलेंगी, तब हिंदुस्तान का ऐश्वर्य होगा। इसके शब्दों पर से बहुत 'वह' जमेगा। इस पुस्तक के बारे में तो जैसे-जैसे लोग जानेंगे वैसे-वैसे इसकी कीमत समझ में आएगी।

पापों भस्मीभूत करवाए आप्तवाणी

यह पुस्तक-आप्तवाणी जब प्रकाशित होगी तब लोग पढ़ेंगे और समझ जाएँगे कि ये दादा अद्‌भुत हैं। और इस तरह दादा का नाम तो लेंगे, और उससे कीर्तन भक्ति होगी। क्योंकि इस जगत् में कीर्तन करने योग्य पुरुष जन्म ही नहीं लेता। और अगर उनका कीर्तन किया, तब तो फिर कल्याण हो जाएगा। दुनिया में कैसा है? खुद के पास थोड़ा बहुत होता है लेकिन उनके जीवन काल में तो उल्टा बोलते हैं। कीर्तन यानी रंग लग जाता है। कीर्तन करते-करते, दादा, दादा करते-करते 'दादा' बन जाता है।

प्रश्नकर्ता : आप्तवाणी पढ़ने से दो घंटे के लिए संसार अदृश्य हो गया!

दादाश्री : ऐसे दो घंटे तो आते ही नहीं। संसार में हाज़िर न रहना, वह तो बहुत बड़ी बात है, और आप्तवाणी पढ़ने में जगत् को भूल जाएँ तो निरे पाप धुल जाते हैं। इससे तो सारे पाप भस्मीभूत हो जाएँगे। क्योंकि तब तो न तो संसार में होते हैं और न ही मोक्ष में, मध्य में होते हैं। इसमें संसार बिल्कुल भी नहीं है।

मानना कीमती इस अमूल्य वाणी को

हमारे तीन व्यवहार रहते हैं लेकिन लोगों को दो ही लोगों के व्यवहार लगते हैं। हम बोल रहे हैं, वह रिकॉर्ड है और मैं उसका ज्ञाता-दृष्टा हूँ और आप श्रोता हो। लोगों को ऐसा लगता है कि यह 'आप्तवाणी' मेरे मन में से निकली है। लेकिन नहीं! यह रिकॉर्ड है। मुझे खुद भी यह आप्तवाणी बहुत पसंद आई है न!

यह आप्तवाणी तो बहुत आश्चर्यजनक चीज़ है। और आप्तवाणी से संसार व्यवहार में भी सारी अड़चनें खत्म हो जाएँगी।

कई लोग मुझे ऐसा कहते हैं कि जब बहुत परेशानी में होता हूँ और आप्तवाणी लेकर ज़रा यों देखता हूँ तो ऐसा पृष्ठ खुलता है कि मेरी परेशानी दूर कर देता है। उन्हें मिल जाती है, लिंक मिल जाती है।

प्रश्नकर्ता : संकलन बहुत अच्छा हुआ है। हर एक सब्जेक्ट (विषय) बहुत अच्छी तरह संकलित किया गया है।

दादाश्री : हाँ। मेरी ऐसी मेरी इच्छा है, इसलिए अच्छा होता है। लिखा है, बहुत सुंदर लिखा गया है। मुझे तो ज़रा देखने के लिए भेजते हैं न, तो देखकर मैं खुश हो जाता हूँ। थोड़ा बहुत समय निकालकर पढ़ते रहना चाहिए।

एक व्यक्ति ने तो मुझ से कहा कि, 'छह साल में पहली आप्तवाणी समाप्त कर रहा हूँ।' 'एक-एक शब्द को मैंने इतना विवेचन किया न कि बात ही मत पूछो।' पहली आप्तवाणी। और अपने महात्मा तो, तीन घंटे में, पहली आप्तवाणी खत्म!

अब उसे चाहे कैसे भी पढ़कर पूरा कर ले

इसका क्या मतलब है? फिर भी न पढ़े उससे अच्छा कुछ तो पढ़े। कभी तो उसमें से (सार) मिलेगा।

बाहर के लोगों को तो यों ही समकित हो जाएगा, पढ़ने से भी समकित हो जाएगा (इस वाणी से)। अर्थात् आप्तवाणी काम निकाल दे, ऐसी है।

ज्ञान बीज सुरक्षित, आप्तवाणी में

यदि अपनी मात्र एक 'आप्तवाणी' भी जीवित रहेगी न, तो हिंदुस्तान में से ज्ञान समाप्त नहीं होगा। यह तो ज्ञान बीज है, अर्थात् आप्तवाणी से हिंदुस्तान में ज्ञान बीज रहेगा, वर्ना हिंदुस्तान में ज्ञान बीज फ्रेक्चर (टूट) हो गए हैं। इसमें पूर्ण धर्म आ जाता है और समझना भी सरल है। शास्त्रों से भी ज़्यादा विस्तारपूर्वक। और उसमें अंग्रेजी शब्द इसलिए रखे गए हैं ताकि आज के युवाओं के काम आएँ। इसके बाद इन्हें शास्त्रों के किसी साधन की भी ज़रूरत ही नहीं रहेगी।

जो पढ़नेवाले हैं, वे इसकी अलौकिकता पर आफरीन होते रहते हैं। ये पुस्तकें तो हज़ारों सालों तक बहुत काम आएँगी।

होगा कल्याण, इस आप्तवाणी द्वारा

हम क्या कहना चाहते हैं कि इन पुस्तकों के आधार पर भारत में ऐसी आर्यता फैला दो कि देश सुखमय बन जाए। आर्यता में अनाड़ीपन घुस गया है, वही निकल जाना चाहिए। माल है तो सुगंधीदार लेकिन उसमें दुर्गंध आ गई है। सिर्फ इस रास्ते तक का ही झंझट है। यह देश है ही आफतवाला, इसलिए आफतें तो आती ही रहेंगी लेकिन हमें प्रयत्न करते रहना है। हमारा एक ही शब्द ऐसे उगेगा कि आश्चर्य होगा।

यह आप्तवाणियाँ लोगों को बहुत हेल्प करेंगी, यदि भविष्य के लोगों के हाथ में आएँगी तो! क्योंकि इसमें हर एक कोने की समझ रखी गई है। ऐसा कोई कोना बाकी नहीं बचा जिसके बारे में समझाना रह गया हो। और अभी तो ऐसी चौदह आप्तवाणियाँ आएँगी, वे अलग ही प्रकार की होंगी! ये तो शास्त्र हैं, ये जो चौदह आप्तवाणियाँ प्रकाशित होंगी न, वे चौदह शास्त्र हैं।

प्रश्नकर्ता : आपने तो बिखरे हुए मोतियों को ढूँढकर हार बनाने जैसा साहित्य दिया है। बहुत-बहुत धन्यवाद, हम आपके बहुत ऋणी है।

दादाश्री : अपनी ये पुस्तकें आने के बाद सभी धर्मवाले लोग कह रहे हैं कि 'अब पहले के शास्त्रों को ऊपर रख देंगे तो चलेगा।' अपनी पुस्तकें देशी भाषा में है, फिर इनका अन्य भाषाओं में अनुवाद होगा। चौदह आप्तवाणियाँ बनेंगी और यही शास्त्रों के तौर पर चलेंगी।

जैसे-जैसे हिंदुस्तान के लोगों तक पहुँचेंगी और जब लोगों में यह ज्ञान उग निकलेगा, तब हिंदुस्तान का ऐश्वर्य कुछ और ही होगा!

80 हज़ार सालों तक यह ज्ञान रहेगा

यह अद्‌भुत विज्ञान है! इसलिए काम निकाल लेना है, ऐसा ज्ञान तो शायद ही कभी प्रकट होता हैं। अस्सी हज़ार सालों तक यह ज्ञान रहेगा। इस ज्ञान की महक अस्सी हज़ार सालों तक रहेगी। फिर इस ज्ञान की महक तो क्या लेकिन बूंद भी नहीं रहेगी। अस्सी हज़ार साल तक वह महेक रहेगी। भगवान महावीर का यह काल 18 हज़ार साल तक का बचा है न, तभी तक। अब तो काल कैसा आ रहा है, वह जानते हो आप? भगवान महावीर की उपस्थिति में जैसा काल था वैसा काल आ रहा है। दूषमकाल में सुषमकाल आ रहा है। आश्चर्य है न यह भी! और उसके फर्स्ट (पहले) निमित्त ये ज्ञानीपुरुष। और इस निमित्त के माध्यम से यह सब उत्पन्न हुआ है। पूरा वर्ल्ड आश्चर्य में हैं, सिर्फ जैन नहीं, वैष्णव नहीं, हिंदुस्तान नहीं, पूरे वर्ल्ड का आश्चर्य।

- जय सच्चिदानंद

दादावाणी

कर्म - कर्मफल - कर्मफल परिणाम

प्रश्नकर्ता : पिछले जन्म के जो चार्ज हो चुके कर्म हैं, वे डिस्चार्ज रूप में इस जन्म में आते हैं। तो इस जन्म के जो कर्म हैं, वे इसी जन्म में डिस्चार्ज के रूप में आते हैं या नहीं?

दादाश्री : नहीं। पिछले जन्म के कॉज़ेज़ हैं न, वे इस जन्म के इफेक्ट हैं। इस जन्म के कॉज़ेज़ अगले जन्म के इफेक्ट हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कुछ कर्म ऐसे होते हैं कि यहाँ पर ही भुगतने पड़ते हैं, आपने ऐसा कहा है एक बार।

दादाश्री : वह तो इस जगत् के लोगों को ऐसा लगता है। जगत् के लोगों को क्या लगता है? हं... देख, होटल में बहुत खाता था और उससे मरोड़ हो गए। 'होटल में खाता था, वह कर्म बाँधा, उससे ये मरोड़ हो गए' कहेंगे। जब कि ज्ञानी क्या कहते हैं, वह होटल में किसलिए खाता था? ऐसा किसने सिखाया उसे, होटल में खाना? किस तरह हुआ? संयोग खड़े हो गए। पहले जो योजना की हुई थी, वह योजना परिणाम में आई, इसलिए वह होटल में गया। वे जाने के संयोग सारे मिल आते हैं। इसलिए अब छूटना हो तो छूटा नहीं जा सकता। उसके मन में ऐसा होता है कि अरे ऐसा क्यों होता होगा?

तब यहाँ के भ्रांतिवाले को ऐसा लगता है कि यह काम किया इसलिए ऐसा हुआ। भ्रांतिवाले ऐसा समझते हैं कि यहाँ कर्म बाँधते हैं और यहीं भोगते हैं। ऐसा समझते हैं। परन्तु यह खोजबीन नहीं करते कि खुद को नहीं जाना हो, फिर भी किस तरह जाता है? उसे नहीं जाना है फिर भी किस प्रकार, किस नियम से वह जाता है, वह हिसाब है।

तब हम और अधिक सिखाते हैं कि इन बच्चों को मारना मत बिना बात के, लेकिन फिर से ऐसा भाव नहीं करे, वैसा करो। फिर से योजना नहीं करे, वैसा करो। चोरी खराब है, होटल में खाना खराब है.... ऐसा उसे ज्ञान उत्पन्न हो, ऐसा करो, ताकि फिर से अगले जन्म में ऐसा नहीं हो। यह तो मारते रहते हैं और बेटे से कहेंगे, 'देख! नहीं जाना है तुझे', तो उसका मन उल्टा चलता है, 'भले ही ये कहें, हम तो जाएँगे, बस।' बल्कि हठ पकड़ता है और उससे ही ये कर्म उल्टे होते हैं न! माँ-बाप उल्टा करवाते हैं।

प्रश्नकर्ता : पहले जो भाव किए थे, इसलिए होटल में गया, अब होटल में गया, फिर वहाँ पर खाया और फिर मरोड़ हो गए, यह सब डिस्चार्ज है?

दादाश्री : वह होटल में गया, वह डिस्चार्ज है और वे मरोड़ हो गए, वह भी डिस्चार्ज है। डिस्चार्ज खुद के बस में नहीं रहते, कंट्रोल नहीं रहता, आउट ऑफ कंट्रोल हो जाते हैं।

अब एक्ज़ेक्ट कर्म की थियरी किसे कहते हैं, ऐसा यदि समझे, तो वह मनुष्य पुरुषार्थ धर्म को समझ सकेगा। इस जगत् के लोग जिसे कर्म कहते हैं, उसे कर्म की थ्योरी कर्मफल कहती है। होटल में खाने का भाव होता है, पूर्वजन्म में कर्म बाँधा था, उसके आधार पर खाता है। वहाँ यह कर्म कहलाता है। उस कर्म के आधार पर इस जन्म में वह बार-बार होटल में खाता रहता है। वह कर्मफल आया कहलाता है, और ये मरोड़ हुए, उसे जगत् के लोग कर्मफल आया ऐसा मानते हैं, जब कि कर्म की थ्योरी क्या कहती है, ये मरोड़ हुए, वह कर्मफल का परिणाम आया।

वेदांत की भाषा में, होटल में खाने के लिए आकर्षित होता है वह पूर्व में बाँधे हुए संचित कर्म के आधार पर है, अभी भीतर बिल्कुल ना है फिर भी होटल में जाकर खा आता है, वह प्रारब्ध कर्म और उसका फिर वापिस इस जन्म में ही परिणाम आता है और मरोड़ हो जाते हैं वह क्रियमाण कर्म।

(परम पूज्य दादाश्री की वाणी में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

12-16 अक्तूबर : सेफ्रोनी मेहसाना में अविवाहित बहनों के लिए पाँच दिनों की ब्रह्मचर्य शिविर आयोजित हुई। ब्रह्मचर्य पुस्तक पर पारायण और अपेक्षा पर सुंदर प्रश्नोत्तरी सत्संग हुए। इस बार बहनों ने एक नई एक्टिविटी की, जिसका विषय था, 'इन्टेरनेट और टी.वी. के जोखिम' शिविरार्थी बहनों ने अलग-अलग टीम बनाकर इस विषय पर चर्चा करके सुंदर प्रस्तुति की। आप्तपुत्री बहनों द्वारा ग्रूप सत्संग, व्यक्तिगत मार्गदर्शन, नाटक एवं गरबा वगैरह जैसे कार्यक्रम किए गए। शिविर दौरान 325 बहनों का रजिस्ट्रेशन हुआ। अंतिम दिन पूज्य श्री के व्यक्तिगत दर्शन से शिविरार्थी बहनों ने खुद को धन्य अनुभव किया।

15-16 अक्तूबर : नवरात्रि दौरान ए.टी.पी.एल. (अडालज त्रिमंदिर संकुल) में आयोजित गरबा में पूज्य श्री दो दिन पधारे और महात्मा भाईयों-बहनों के ग्रूप में घूमते हुए दर्शन का लाभ दिया। माताजी की भक्ति-गरबा और पूज्य श्री की उपस्थिति से सभी महात्माओं ने धन्य अनुभव किया। गरबा के बाद पूज्य श्री ने 'कमान छटकना और दिमाग खिसकना' विषय पर सुंदर बातें कही। अंत में भाव से अंबा माताजी की आरती की गई।

21-23 अक्तूबर : दो साल बाद पूज्य श्री के आफ्रीका सत्संग प्रवास की तैयारी हुई। इस प्रवास में भारत, यू.के, यू.एस.ए. वगैरह देशों से 40 महात्मा साथ गए थे। प्रवास की शुरुआत तन्ज़ानिया देश की राजधानी दार-ए-सलाम में पूज्य श्री के प्रथम बार आयोजित कार्यक्रम से हुई। पहले एक बार पूज्य नीरू माँ दार-ए-सलाम सत्संग के लिए गए थे। यहाँ महात्माओं की संख्या नहीं के बराबर होने से केन्या के महात्माओं ने तीन बार यहाँ आकर अक्रम विज्ञान का अच्छा खासा प्रचार किया था। अप्रैल में दार-ए-सलाम में आप्तपुत्रों का भी सत्संग हुआ था। कार्यक्रम के प्रथम दिन हिंदू काउन्सिल और जैन समाज के ट्रस्टियों को पूज्य श्री के साथ सत्संग और भोजन के लिए आमंत्रित किया था। पूज्य श्री से मिलकर उन्होंने आनंद व्यक्त किया। सत्संग में आए हुए मुमुक्षुओं में काफी नवयुगल भी थे, उन्होंने सत्संग में रेग्युलर आने का निश्चय किया। ज्ञानविधि दौरान 125 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

24-26 अक्तूबर : मोम्बासा में तीन दिनों के लिए पूज्य श्री का सत्संग-ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। दार-ए-सलाम से मोम्बासा जानेवाली फ्लाइट में पूज्य श्री और सभी महात्मा ही थे। ऐसा लग रहा था मानो दादा की अक्रम फ्लाइट में मुसाफरी कर रहे हैं। केन्या के विविध शहरों से आए हुए लगभग 120 महात्माओं को रिसोर्ट में पूज्य श्री के साथ रहने का लाभ मिला। सभी महात्मा एक साथ होने के कारण मिनि शिविर जैसा लग रहा था। मोम्बासा सेन्टर के जी.एन.सी के बच्चों ने सुंदर भक्तिपद एवं जगत् कल्याण की भावना पूज्य श्री के समक्ष प्रस्तुत की और सत्संग दौरान उन्हें परेशान करनेवाले प्रश्न पूज्य श्री से पूछे। वहाँ के बीच पर महात्माओं ने पूज्य श्री के साथ इन्फॉर्मल समय व्यतीत किया, बीच पर गरबा भी किया और पूज्य श्री के साथ भोजन-प्रसाद भी लिया। ज्ञानविधि में 95 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

27-29 अक्तूबर : मोम्बासा से नैरोबी विमानयात्रा दौरान महात्माओं को 'अक्रम फ्लाइट' में पूज्य श्री के साथ मुसाफरी करने का फिर से मौका मिला। 28 दिनांक को पूज्य श्री के साथ महात्मा नैरोबी में नेशनल पार्क देखने गए। 29 की सुबह पूज्य श्री नैरोबी सत्संग सेंटर पर गए और वहाँ होनेवाले सत्संग प्रवृतियों की जानकारी प्राप्त की। पूज्य श्री के सत्संग में काफी नए मुमुक्षु भी आए थे। उन्होंने काफी प्रश्न पूछे और सत्संग सुनने में रुचि ली। ज्ञानविधि में 150 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया, जिसमें कुछ स्थानिक अफ्रीकन मुमुक्षु भी थे।

31 अक्तूबर - 2 नवम्बर : इस साल केन्या की शिविर का स्थल 'नैवाशा सोपा लॉज़' नामक नई जगह पर रखा गया। आसपास की जगह बहुत सुंदर और हरीभरी थी। वहाँ झेब्रा, ज़िराफ, हीप्पो जैसे जंगली जानवर रिसोर्ट के बगीचे में घूमते देखे गए। आफ्रिका के विविध शहरों से आए हुए एवं प्रवास में सम्मिलित कुल 200 महात्माओं ने इस शिविर में हिस्सा लिया। शिविर की प्रथम रात पूज्य श्री ने केन्या के सेवार्थी महात्माओं के साथ सत्संग किया और भोजन लिया था। शिविर दौरान एक सेशन 'सत्य-असत्य' पुस्तक का अध्ययन एवं सत्संग और 'संसार में भय आत्मा में निर्भय,' टॉपिक पर और जनरल प्रश्नोत्तरी के सत्संग हुए। जी.एन.सी के बच्चों-युवाओं द्वारा सुदंर सांस्कृतिक कार्यक्रम पूज्य श्री के समक्ष प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात महात्मा बगीचे में दादाई भक्ति गरबा में झूम उठे थे। आप्तपुत्र-आप्तपुत्री द्वारा अनुक्रम से विवाहित भाईयों-बहनों के साथ सत्संग हुऐ और युवाओं के लिए भी सत्संग हुआ था। स्थानिक महात्माओं को पूज्य श्री का व्यक्तिगत मार्गदर्शन और दर्शन मिले इसलिए 'दादा-दरबार' का आयोजन हुआ। रिसोर्ट के मेनेजमेन्ट और स्टाफ पूज्य श्री की उपस्थिति से बहुत प्रभावित हुए। पूज्य श्री की स्मृति हमेशा उनके पास बनी रहे इस हेतु से उनके आशीर्वाद के रूप में उन्होंने अपने केम्पस में एक पौधा लगाने की विनती की, जो कि पूज्य श्री ने पूर्ण की थी।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

पूणे	**दि. : 3 जनवरी**	**संपर्क :** 7218473468	**रायगढ़**	**दि. : 4 फरवरी**	**संपर्क :** 9827481336
ब्रह्मपुर	**दि. : 30 जनवरी**	**संपर्क :** 9668159987	**कोलकाता**	**दि. : 6-7 फरवरी**	**संपर्क :** 9830093230
भुवनेश्वर	**दि. : 31 जनवरी**	**संपर्क :** 9090276204	**भोपाल**	**दि. : 25 फरवरी**	**संपर्क :** 9425024405
कटक	**दि. : 1 फरवरी**	**संपर्क :** 7809266474	**जबलपुर**	**दि. : 26 फरवरी**	**संपर्क :** 9425160428
टाटानगर	**दि. : 2 फरवरी**	**संपर्क :** 7209772783	**इन्दौर**	**दि. : 27 फरवरी**	**संपर्क :** 9039936173
बिलासपुर	**दि. : 3 फरवरी**	**संपर्क :** 9425530470	**इन्दौर**	**दि. : 28 फरवरी**	**संपर्क :** 9039936173

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर सपर्क करें ।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
- **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा रविवार शाम 5-30 से 6 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** सोम-बुध-गुरु शाम 4 से 4-30 तथा मंगलवार शाम 4-30 से 5 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 10 से 10-30, दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शुक्र दोपहर 3-30 से 4 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'साधना'** पर हर रोज़ शाम 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर मंगल से रवि रात 10 से 10-30 (गुजराती में) **(समय-वार में परिवर्तन)**
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8-30 से 9 (गुजराती में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 11 से 11-30 EST
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Australia
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus. **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (गुजराती में)

2 जनवरी 2016 से नेशनल-दूरदर्शन पर सप्ताह के सातों दिन सत्संग प्रसारण

सोम से शुक्र - सुबह 8-30 से 9

शनि - सुबह 9-30 से 10 और रवि - सुबह 6-30 से 7

अडालज त्रिमंदिर में आप्तवाणी-13 (पू.) (गुजराती) पर सत्संग पारायण (शिविर)

दि. **19 दिसम्बर** - **आप्तवाणी 14 भाग-5** (गुजराती) का विशेष विमोचन समारोह - शाम 4-30 बजे से

दि. **19 से 26 दिसम्बर** - सुबह 9-30 से 12-45 तथा शाम 4-30 से 7, रात 8-30 से 9-30 (सामायिक)

दि. **27 दिसम्बर** - सुबह 9-30 से 12 - **श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

सूचना : 1) **इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।**

2) आप्तवाणी 13 (पू.) के पेज. 97 से वाचन-सत्संग होगा।

3) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए।

4) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, टोर्च, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ।

5) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

अडालज त्रिमंदिर

दि. **2 जनवरी** (शनि), शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **3 जनवरी** (रवि), शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

दि. **3 जनवरी** (रवि), सुबह 10-30 से 12 - **आप्तपुत्र सत्संग (नए मुमुक्षुओं के लिए)**

दि. **19 मार्च** (शनि), सुबह 10 से 12 - **पू. नीरू माँ की 9वी पुण्यतिथि पर स्पे. सीडी** तथा **अन्य कार्यक्रम**

शाम 4-30 से 10 - **आप्तसिंचन साधकों की समर्पण विधि** तथा **विशेष भक्ति कार्यक्रम**

दि. **20 मार्च** (रवि), शाम 4-30 से 7 - **ज्ञानविधि**

अंजार त्रिमंदिर का प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

दि. 6 मार्च 2016 (रविवार)

प्राणप्रतिष्ठा : सुबह 10 से 1-30, **प्रक्षाल-पूजन-दर्शन-आरती :** शाम 4 से 7, **भक्ति :** रात 8-30 से 10

स्थल : अंजार त्रिमंदिर, अंजार-मुन्द्रा रोड, सीनोग्रा पाटीया के पास, सीनोग्रा गाँव, ता.-अंजार. **संपर्क :** 9574008126

विशेष सूचना :

१) **प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल एक दिन का है, इसलिए रात्रि आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाएगी।** जो महात्मा-मुमुक्षु उसी दिन सीधे ही महोत्सव स्थल पर पहुँचेंगे, उनके लिए बाथरूम-टोइलेट की सुविधा स्थल पर रहेगी।

२) त्रिमंदिर अंजार रेल्वे स्टेशन से 7 कीमी की दूरी पर है।

३) कार्यक्रम में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है ।

दि. **4 मार्च** (शुक्र)- **सत्संग** तथा **5 मार्च** (शनि)- **ज्ञानविधि - स्थानिक मुमुक्षुओं के लिए**

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,

अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

नडियाद

दि. **5 जनवरी** (मंगल), शाम 7-30 से 10-30 - **सत्संग** तथा **6 जनवरी** (बुध), शाम 7 से 10-30 - **ज्ञानविधि**
दि. **7 जनवरी** (गुरु), शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : बासुदीवाला स्कूल ग्राउन्ड, चेतक पेट्रोल पंप के पास, नडियाद (गुजरात). **संपर्क :** 9408528520

वडोदरा

दि. **8-9 जनवरी** (शुक्र-शनि), शाम 7 से 10 - **सत्संग** तथा **10 जनवरी** (रवि), शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**
दि. **11 जनवरी** (सोम), शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : रेवा पार्क गरबा ग्राउन्ड, कलादर्शन चार रस्ता के पास, वाघोडिया रोड, वडोदरा. **संपर्क :** 9924343335

राजकोट

दि. **30 जनवरी** व **1 फरवरी** (शनि व सोम), शाम 7 से 10 - **सत्संग** तथा **31 जनवरी** (रवि), शाम 5-30 से 9 **ज्ञानविधि**
स्थल : आलाप ग्रीन सीटी के सामने, रैया रोड, राजकोट (गुजरात). **संपर्क :** 9879137971

पोरबंदर

दि. **3 फरवरी** (बुध), शाम 7 से 10 - **सत्संग** तथा **4 फरवरी** (गुरु), शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**
दि. **5 फरवरी** (शुक्र), शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : खीजडी प्लोट, स्वामीनारायण मंदिर के सामने, M.G. रोड, पोरबंदर (गुजरात). **संपर्क :** 9426954683

जुनागढ

दि. **6 फरवरी** (शनि), शाम 7-30 से 10-30 - **सत्संग** तथा **7 फरवरी** (रवि), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**
दि. **8 फरवरी** (सोम), शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : शिवम पार्टी प्लोट, गिरिराज मेईन रोड, बस स्टेशन के पीछे, जुनागढ (गुजरात). **संपर्क :** 9924344489

भावनगर

दि. **9-10 फरवरी** (मंगल-बुध), शाम 7 से 10 - **सत्संग** तथा **11 फरवरी** (गुरु), शाम 6-30 से 10- **ज्ञानविधि**
दि. **12 फरवरी** (शुक्र), शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : गुलिस्ता मैदान, वाघावाडी रोड, भावनगर, (गुजरात). **संपर्क :** 9924344425

पालीताणा यात्रा-शिविर

दि. **12 फरवरी** (शुक्र)- शाम 4-30 से 7 - **सत्संग**
दि. **14 फरवरी** (रवि)- सुबह 9-30 से 12 - **आप्तपुत्र सत्संग** तथा दोपहर 2-30 से 6 - **ज्ञानविधि**
दि. **15 फरवरी** (सोम)- सुबह 9-30 से 12 - **सत्संग**
स्थल : चेन्नई धर्मशाला का सामने, तलेटी, पालीताणा, (गुजरात). **संपर्क :** 9429638542
इस यात्रा-शिविर कार्यक्रम में भोजन व रहने हेतु आपको रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

मुंबई

दि. **26-27 फरवरी** (शुक्र-शनि), शाम 6 से 9 - **सत्संग** तथा **28 फरवरी** (रवि), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**
स्थल : रेल्वे पुलीस कवायत ग्राउन्ड, कुकरेजा टावर के पीछे, वल्लभबाग एक्स. लेन, **घाटकोपर (इस्ट).**
दि. **29 फरवरी** (सोम), शाम 6 से 9 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : भूरीबेन गोलवाला ओडिटोरीयम, कामा लेन, घाटकोपर **(वेस्ट).** **संपर्क :** 9879137971

दिसम्बर 2015
वर्ष-11 अंक-2
अखंड क्रमांक - 122

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month

परिभाषा आप्तवाणी की

आप्तवाणी अर्थात, इसमें 'आप्त' का अर्थ क्या है कि जो संसार में भी सर्वस्व प्रकार से विश्वास करने योग्य है। मोक्ष में जाते हुए ठेठ तक विश्वास करने योग्य हों, तो वे हैं 'ज्ञानीपुरुष'। उनकी वाणी आप्तवाणी कहलाती है! तो फिर बात ही क्या करनी? वे निष्पक्षपाती होते हैं, इसीलिए कुछ अलग ही विज्ञान है यह! नए शास्त्र लिखे जाएँ ऐसी बात है यह तो। सिर्फ एक घंटे में पूरा विज्ञान समझ जाए! ये पुस्तकें पूरे जगत् के कल्याण के लिए हैं। ये पुस्तकें तो हजारों सालों तक काम आएँगी। ये चौदह आप्तवाणियाँ बनेंगी न, उनकी अलौकिकता पर तो लोग आफरीन हो जाएँगे।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.